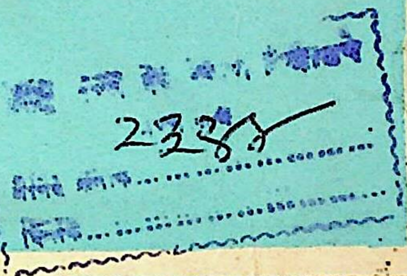
तूफान

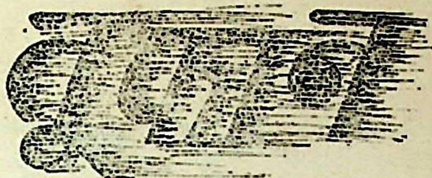
खलील जिब्रान



सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त
तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर
प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

२५।१२।८१		



हृदयस्पर्शी प्रेरक भाव-कथाएं

•

लेखक
खलील जिब्रान

अनुवादक
नरेन्द्र चौधरी

•

१९७८



सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली वार : १९७८
[redacted]
सं... : ... 5/-

मुद्रक
रूपक प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

प्रकाशकीय

खलील जिब्रान के नाम से हिन्दी के पाठक भलीभांति परिचित हैं। उनकी प्राय: सभी पुस्तकों के अनुवाद हिन्दी में हो चुके हैं और उनको पाठकों ने इतना पसंद किया है कि उनकी मांग बराबर बनी रहती है।

सच यह है कि जिब्रान विश्व के उन लेखकों में से थे, जिन्होंने सामाजिक अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज ऊंची की और किसी के भी अनाचार को सहन न करने की प्रेरणा दी। जिब्रान का सम्पूर्ण साहित्य विद्रोह की भावना से ओत-प्रोत है—उस विद्रोह की भावना से, जो समाज के अंध-विश्वासों, कुरीतियों तथा शोषण को सहन नहीं करती और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए लोगों को प्रेरित करती है।

जिब्रान कवि और कलाकार भी हैं। अत: उनकी लेखन-शैली में कवि की कल्पना-शक्ति है, हृदय की संवेदनशीलता है और कलाकार की शालीनता है।

'मंडल' ने उनकी नौ पुस्तकें प्रकाशित की हैं। उनकी 'जीवन संदेश' की तो इतनी मांग है कि पिछले दिनों उसका नया संस्करण किया था और अब उसे फिर छापना पड़ा है।

लेखक की प्रस्तुत पुस्तक बहुत समय से अप्राप्य थी और पाठक बार-बार उसके पुनर्मुद्रण का आग्रह कर रहे थे। हमें हर्ष है कि पुस्तक पाठकों को सुलभ हो रही है।

इसकी रचनाएं उनकी अन्य रचनाओं से भिन्न हैं। इनमें जिब्रान ने भाव-कथाओं के माध्यम से उस समाज के नव-निर्माण की ओर

संकेत किया है, जिसमें इंसान इंसान के बीच भेद नहीं होगा और सब एक-दूसरे के दुःख में काम आयेंगे। इस पुस्तक की प्रत्येक रचना पाठकों के हृदय और मस्तिष्क को झकझोर देती है।

पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वे इस तथा लेखक की अन्य सभी पुस्तकों को पढ़ें और उनके व्यापक प्रचार-प्रसार में सहायक हों।

—मंत्री

दो शब्द

महाकवि खलील जिब्रान हिन्दी-प्रेमियों के लिए नये नहीं हैं। उनकी पुस्तकों के हिन्दी-अनुवादों से पाठकों को ऐसा स्वाद मिला है, जो पहले कभी नहीं मिला।

उनकी रचनाओं में आज के मनुष्य की समस्याओं का हल है। उनकी शैली जहां प्रवल है, वहां वह कोमल, मधुर और हृदय-द्रावक भी है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह रहस्यमय विचारों को बड़ी ही सरलता से व्यक्त कर देते हैं। उनके गहन विचार सीधे-सादे शब्दों की पोशाक पहनकर मनुष्य के हृदय में उतर जाते हैं।

उनके विद्रोही विचारों के लिए उन्हें देश-निकाला दिया गया, लेकिन देश से बाहर रहकर भी उनके देश-प्रेम का अंत नहीं हुआ, उल्टे वह और बढ़ा।

प्रस्तुत पुस्तक की भाव-कथाएं आत्मकहानी की भांति जान पड़ती हैं। लेखक की मान्यताएं दया, बंधुत्व और प्रेम पर आधारित हैं। उन्हीं की झांकी इस पुस्तक की रचनाओं में मिलती है।

पाठक इस उत्तम पुस्तक को पढ़ें और दूसरों को पढ़वायें, यही हमारी इच्छा है।

—नरेन्द्र चौधरी

अनुक्रम

□□

○○

तूफान



१ | तूफान

यूसुफ-अल-फाखरी की उम्र उस समय तीस वर्ष की थी, जब उन्होंने संसार त्याग दिया और उत्तरी लेबनान में कदेसा की घाटी के समीप वह एक एकांत आश्रम में रहने लगे। आसपास के देहातों में यूसुफ के बारे में तरह-तरह की किम्वदन्तियां सुनने में आती थीं। कुछ का कहना था कि वह एक धनी-मानी परिवार के थे और किसी स्त्री से प्रेम करने लगे थे, जिसने उनके साथ विश्वासघात किया। अतः जीवन से निराश होकर उन्होंने एकान्तवास ग्रहण कर लिया। कुछ लोगों का कथन था कि वह एक कवि थे और कोलाहलपूर्ण नगर को त्यागकर इस आश्रम में इसलिए रहने लगे, जिससे एकान्त में अपने विचारों को संकलित कर सकें और अपनी ईश्वरीय प्रेरणाओं को छन्दोबद्ध कर सकें। परन्तु कुछ का विश्वास था कि वह एक रहस्यमय व्यक्ति थे और उन्हें अध्यात्म में ही संतोष मिलता था, यद्यपि अधिकांश लोगों का यह मत था कि वे पागल थे।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है, इस मनुष्य के बारे में मैं किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पाया, क्योंकि मैं जानता था कि उसके हृदय में कोई गहरा रहस्य छिपा है, जिसका ज्ञान कल्पना-मात्र

से प्राप्त नहीं किया जा सकता। एक अरसे से मैं इस अनोखे मनुष्य से भेंट करने की सोच रहा था। मैंने अनेक प्रकार से इनसे मित्रता स्थापित करने का प्रयास किया, इसलिए कि मैं इनको वास्तविकता का पता कर सकूं और यह पूछकर कि इनके जीवन का क्या ध्येय है, इनकी कहानी को जान लूं। किन्तु मेरे सभी प्रयास विफल रहे। जब मैं प्रथम बार उनसे मिलने गया तो वे लेबनान के पवित्र देवदारों के जंगल में घूम रहे थे। मैंने उनका चुने हुए शब्दों की सुन्दरतम भाषा में अभिवादन किया, किन्तु उन्होंने उत्तर में जरा-सा सिर झुकाया और लम्बे डग भरते हुए आगे निकल गये।

दूसरी बार मैंने उन्हें आश्रम के एक छोटे-से अंगूरों के बगीचे के बीच खड़े देखा। मैं फिर उनके निकट गया और उनसे पूछा, "देहात के लोग कहा करते हैं कि इस आश्रम का निर्माण चौदहवीं शताब्दी में सीरिया-निवासियों के एक सम्प्रदाय ने किया था। क्या आप इसके इतिहास के बारे में कुछ जानते हैं?"

उन्होंने उदासीन भाव में उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि उस आश्रम को किसने बनवाया और न मुझे यह जानने की परवा है।" उन्होंने मेरी ओर से पीठ फेर ली और बोले, "तुम अपने बाप-दादों से क्यों नहीं पूछते, जो मुझसे अधिक बूढ़े हैं और जो इन घाटियों के इतिहास से मुझसे कहीं अधिक परिचित हैं?"

अपने प्रयास को बिलकुल ही व्यर्थ समझकर मैं लौट आया।

इस प्रकार दो वर्ष बीत गये। उस निराले मनुष्य की झक्की जिन्दगी ने मेरे मस्तिष्क में घर कर लिया और वह बार-बार मेरे सपनों में आ-आकर मुझे तंग करने लगी।



शरद् ऋतु में एक दिन जब मैं यूसुफ-अल-फाखरी के आश्रम के पास की पहाड़ियों तथा घाटियों में घूमता फिर रहा था, अचानक एक प्रचण्ड आंधी और मूसलाधार वर्षा ने मुझे घेर लिया और तूफान मुझे एक ऐसी नाव की भांति इधर-से-उधर भटकाने लगा, जिसकी पतवार टूट गई हो और जिसका मस्तूल सागर के तूफानी झझोरों से छिन्न-भिन्न हो गया हो। बड़ी कठिनाई से मैंने अपने पैरों को यूसुफसाहब के आश्रम की ओर बढ़ाया और मन-ही-मन सोचने लगा, "बड़े दिनों की प्रतीक्षा के बाद यह एक अवसर हाथ लगा है। मेरे वहां घुसने के लिए तूफान एक बहाना बन जायगा और अपने भीगे हुए वस्त्रों के कारण मैं वहां काफी समय तक टिक सकूंगा।"

जब मैं आश्रम में पहुंचा तो मेरी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी। मैंने आश्रम के द्वार को खटखटाया तो जिनकी खोज में मैं था, उन्होंने ही द्वार खोला। अपने एक हाथ में वह एक ऐसे मरणासन्न पक्षी को लिये हुए थे, जिसके सिर में चोट आई थी और उसके पंख कट गये थे। मैंने यह कहकर उनकी अभ्यर्थना की, "कृपया मेरे इस बिना आज्ञा के प्रवेश और कष्ट के लिए क्षमा करें। अपने घर से बहुत दूर इस बढ़ते हुए तूफान

में मैं बुरी तरह फंस गया था।"

त्यौरी चढ़ाकर उन्होंने कहा, "इस निर्जन वन में अनेक गुफाएं हैं, जहां तुम शरण ले सकते थे।"

जो हो, उन्होंने द्वार बंद नहीं किया। मेरे हृदय की धड़कन पहले से ही बढ़ने लगी; क्योंकि शीघ्र ही मेरी बड़ी तमन्ना पूरी होने जा रही थी। उन्होंने पक्षी के सिर को बड़ी सावधानी से सहलाना शुरू किया और इस प्रकार अपने एक ऐसे गुण को प्रकट करने लगे, जो मुझे अति प्रिय था। इस मनुष्य के दो प्रकार के परस्पर-विरोधी गुणों—दया और निष्ठुरता को एक साथ देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा था। लगा, हम गहरी निस्तब्धता के बीच खड़े हैं। उन्हें मेरी उपस्थिति पर क्रोध आ रहा था, और मैं वहां ठहरे रहना चाहता था।

प्रतीत होता है कि उन्होंने मेरे विचारों को भांप लिया, क्योंकि उन्होंने ऊपर आकाश की ओर देखा और कहा, "तूफान साफ है और वह खट्टा (बुरे मनुष्य का) मांस खाना नहीं चाहता। तुम इससे बचना क्यों चाहते हो?"

कुछ व्यंग्य से मैंने कहा, "हो सकता है, तूफान खट्टी और नमकीन वस्तुएं न खाना चाहता हो, किन्तु प्रत्येक पदार्थ को वह ठण्डा और शक्तिहीन बना देने पर तुला है। निःसंदेह यह मुझे फिर से पकड़ लेगा तो खाये बिना नहीं छोड़ेगा।"

उनके चेहरे का भाव यह कहते-कहते अत्यन्त कठोर हो गया, "यदि तूफान ने तुम्हें निगल लिया होता तो तुम्हारा बड़ा

सम्मान किया होता, जिसके तुम योग्य भी नहीं हो।"

मैंने स्वीकार करते हुए कहा, "हां श्रीमन्! मैं इसीलिए तूफान से छिप गया कि कहीं ऐसा सम्मान न पा जाऊं, जिसके योग्य नहीं हूं।"

इस चेष्टा में कि वह अपने चेहरे पर की मुस्कान मुझसे छिपा सकें, उन्होंने अपना मुंह फेर लिया। वह अंगीठी के पास रखी हुई एक लकड़ी की बेंच की ओर बढ़े और मुझसे कहा कि मैं विश्राम करूं और अपने कपड़ों को सुखा लूं। मैं अपने उल्लास को बड़ी कठिनाई से छिपा सका।

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और स्थान ग्रहण किया। वह भी मेरे सामने ही एक बेंच पर, जो पत्थर को काटकर बनाई गई थी, बैठ गये। वह अपनी उंगलियों को एक मिट्टी के बर्तन में, जिसमें एक प्रकार का तेल रखा हुआ था, बार-बार डुबोने लगे और उस पक्षी के सिर तथा पंखों पर मलने लगे।

बिना ऊपर को देखे ही वह बोले, "शक्तिशाली वायु ने इस पक्षी को जीवन और मृत्यु के बीच पत्थरों पर दे मारा था।"

तुलना-सी करते हुए मैंने उत्तर दिया, "और भयानक तूफान ने, इससे पहले कि मेरा सिर चकनाचूर हो जाय और मेरे पर टूट जायं, मुझे भटकाकर आपके द्वार पर भेज दिया है।"

उन्होंने गम्भीरतापूर्वक मेरी ओर देखा और बोले, "मेरी तो यही चाह है कि मनुष्य पक्षियों का स्वभाव अपनाये और तूफान मनुष्य के पर तोड़ डाले; क्योंकि मनुष्य का झुकाव भय और

कायरता की ओर है और जैसे ही वह अनुभव करता है कि तूफान जाग गया है, वह रेंगते-रेंगते गुफाओं और खाइयों में घुस जाता है और अपने को छिपा लेता है।"

मेरा उद्देश्य था कि उनके स्वतः स्वीकृत एकान्तवास की कहानी जान लूं, इसीलिए मैंने उन्हें यह कहकर उत्तेजित किया, "हां, पक्षी के पास एक ऐसा सम्मान और साहस है, जो मनुष्य के पास नहीं। मनुष्य विधान तथा सामाजिक आचारों के साये में विश्वास करता है, जो उसने अपने लिए स्वयं बनाये हैं। किन्तु पक्षी उसी स्वतन्त्र-शाश्वत विधान के अधीन रहते हैं, जिसके कारण पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपने रास्ते पर निरन्तर घूमती रहती है।"

उनकी आंखें और चेहरा चमक उठा, मानो मुझमें उन्होंने एक समझदार शिष्य को पा लिया हो। वोले, "बहुत सुन्दर ! यदि तुम्हें स्वयं अपने शब्दों पर विश्वास है तो तुम्हें सभ्यता और उसके दूषित विधान और अतिप्राचीन परम्पराओं को तुरन्त ही त्याग देना चाहिए और पक्षियों की तरह ऐसे शून्य स्थान में रहना चाहिए, जहां आकाश और पृथ्वी के महान विधान के अतिरिक्त कुछ भी न हो।

"विश्वास रखना एक सुन्दर बात है," मैंने कहा, "किन्तु उस विश्वास को प्रयोग में लाना साहस का काम है। अनेक मनुष्य ऐसे हैं, जो सागर की गर्जन के समान चीखते रहते हैं, लेकिन उनका जीवन खोखला और प्रवाहहीन होता है, जैसे सड़ती हुई

दलदल, और अनेक ऐसे लोग भी हैं, जो अपने सिरों को पर्वत की चोटी से भी ऊपर उठाये चलते हैं, किन्तु उनकी आत्माएं कन्दराओं के अन्धकार में सोती पड़ी रहती हैं।"

वह कांपते हुए अपनी जगह से उठे और पक्षी को खिड़की के ऊपर एक तह किये हुए कपड़े पर रख आये। फिर उन्होंने कुछ सूखी लकड़ियां अंगीठी में डाल दीं और बोले, "अपने जूतों को उतार दो और अपने पैरों को सेंक लो, क्योंकि भीगे रहना आदमी की सेहत के लिए हानिकारक है। तुम अपने कपड़ों को ठीक से सुखा लो और आराम से बैठो।"

यूसुफसाहब के इस मधुर आतिथ्य ने मेरी आशाओं को उभार दिया। मैं आग के और पास खिसक गया और मेरे भीगे कुरते से पानी भाप बनकर उड़ने लगा। जब वह भूरे आकाश को निहारते हुए ड्योढ़ी पर खड़े थे, मेरा मस्तिष्क उनके आन्तरिक रहस्यों को खोजता दौड़ रहा था। मैंने एक अन-जान की तरह उनसे पूछा, "क्या आप बहुत दिनों से यहां रह रहे हैं?"

मेरी ओर देखे बिना ही उन्होंने शान्त स्वर में कहा, "मैं इस स्थान पर उस समय आया था, जब यह पृथ्वी निराकार तथा शून्य थी, जब इसके रहस्यों पर अन्धकार छाया हुआ था, और ईश्वर की आत्मा पानी की सतह पर तैरती रहती थी।"

यह सुनकर मैं अवाक् रह गया। उद्वेलित और अस्तव्यस्त ज्ञान को समेटने का संघर्ष करते हुए मन-ही-मन मैं बोला,

"कितने अजीब व्यक्ति हैं ये और कितना कठिन है इनकी वास्तविकता को पाना ! किन्तु मुझे सावधानी के साथ, धीरे-धीरे और संतोष रखकर तबतक चोट-पर-चोट करनी होगी जबतक कि इनकी मूकता मुखर न हो जाय और इनकी विचित्रता समझ में न आ जाय !"

●

रात्रि अपनी अन्धकार की चादर उन घाटियों पर फैला रही थी। मतवाला तूफान चिंघाड़ रहा था और वर्षा बढ़ती ही जा रही थी। मैं सोचने लगा कि बाइबिल वाली बात चैतन्य को नष्ट करने और ईश्वर की धरती पर से मनुष्य की गंदगी को धोने के लिए फिर से आ रही है।

लगा कि तत्वों की क्रान्ति ने यूसुफसाहब के हृदय में एक ऐसी शान्ति उत्पन्न की है, जो प्रायः स्वभाव पर अपना असर छोड़ जाती है और एकान्तता को प्रसन्नता से प्रतिबिम्बित कर जाती है। उन्होंने दो मोमबत्तियां सुलगायीं और तब मेरे सम्मुख शराब की एक सुराही और एक बड़ी तश्तरी में रोटी, मक्खन, फल, मधु और कुछ सूखे मेवे लाकर रखे। वह मेरे पास बैठ गये और खाने की थोड़ी मात्रा के लिए—उसकी सादगी के लिए नहीं—क्षमा मांग कर, उन्होंने मुझसे भोजन करने को कहा।

हम उस समझी-बूझी निस्तब्धता में हवा के विलाप तथा वर्षा के चीत्कार को सुनते हुए साथ-साथ भोजन करने लगे।

साथ ही मैं उनके चेहरे को घूरता रहा और उनके हृदय के रहस्यों को कुरेद-कुरेदकर निकालने का प्रयास करता रहा। उनके असाधारण अस्तित्व के सम्भव कारण को भी सोचता रहा।

भोजन समाप्त करके उन्होंने अंगीठी पर से एक पीतल की केतली उठाई और उसमें से शुद्ध सुगन्धित कॉफी दो प्यालों में उंडेल दी। फिर उन्होंने एक छोटे-से लकड़ी के बक्स को खोला और, "भाई" शब्द से सम्बोधित कर,उसमें से एक सिगरेट भेंट की। कॉफी पीते हुए मैंने सिगरेट ले ली, किन्तु जो कुछ भी मेरी आंखें देख रही थीं, उसपर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।

उन्होंने मेरी ओर मुस्कराते हुए देखा और अपनी सिगरेट का एक लम्बा कश खींचकर तथा कॉफी की एक चुस्की लेकर उन्होंने कहा, "तुम जरूर ही मदिरा, कॉफी और सिगरेट यहां पाकर सोच में पड़ गये हो और मेरे खान-पान और ऐश-आराम पर भी आश्चर्य कर रहे हो। तुम्हारी व्यग्रता सभी प्रकार से न्यायोचित है, क्योंकि तुम भी उन्हीं लोगों में से एक हो, जो इन बातों में विश्वास करते हैं कि लोगों से दूर रहने पर मनुष्य जीवन से भी दूर हो जाता है और ऐसे मनुष्य को उस जीवन के सभी सुखों से वंचित रहना चाहिए।"

मैंने तुरन्त स्वीकार कर लिया, "हां ! ज्ञानियों का यही कहना है कि जो केवल ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए संसार को त्याग देता है, वह जीवन के समस्त सुख और आनन्द को अपने

पीछे छोड़ आता है, केवल ईश्वर द्वारा निर्मित वस्तुओं पर सन्तोष करता है और पानी और पौधों पर ही जीवित रहता है।"

जरा रुककर गहन विचारों में निमग्न वह बोले, "मैं ईश्वर की भक्ति तो उसके जीवों के बीच रहकर भी कर सकता था, क्योंकि भक्ति के लिए एकान्त नहीं चाहिए। मैंने संसार को इसलिए नहीं छोड़ा कि मुझे ईश्वर को पाना था, क्योंकि उसे तो मैं हमेशा से अपने माता-पिता के घर पर भी देखता आया हूं। मैंने मनुष्यों का त्याग केवल इसलिए किया कि उनका और मेरा स्वभाव नहीं मिलता था और उनकी कल्पना मेरी कल्पनाओं से मेल नहीं खाती थी। मैंने आदमी को इसलिए छोड़ा, क्योंकि मैंने देखा कि मेरी आत्मा के पहिए एक दिशा में घूम रहे हैं और दूसरी दिशा में घूमते हुए दूसरी आत्माओं के पहियों से जोर से टकरा रहे हैं। मैंने मानव-सभ्यता को छोड़ दिया, क्योंकि मैंने देखा कि वह एक ऐसा पेड़ है, जो अत्यन्त पुराना और भ्रष्ट हो चुका है, किन्तु है शक्तिशाली और भयानक। उसकी जड़ें पृथ्वी के अन्धकार में बन्द हैं और उसकी शाखाएं बादलों में खो गई हैं, किन्तु उसके फूल लोभ, अधर्म और पाप से बने हैं और फल दुःख, संतोष और भय से। धार्मिक मनुष्यों ने यह बीड़ा उठाया है कि जो अच्छा है, उसे उस सभ्यता में भर देंगे और उसके स्वभाव को बदल देंगे, किंतु वे सफल नहीं हो पाये हैं। वे निराश और दुखी होकर मृत्यु को प्राप्त हुए।"

यूसुफसाहब अंगीठी की ओर थोड़ा-सा झुके, मानो अपने शब्दों की प्रतिक्रिया जानने की प्रतीक्षा में हों। मैंने सोचा कि श्रोता ही बने रहना सबसे अच्छा है। वह कहने लगे, "नहीं, मैंने एकान्तवास इसलिए नहीं अपनाया कि मैं एक संन्यासी की भांति जीवन बिताऊं, क्योंकि प्रार्थना, जो हृदय का गीत है, चाहे सहस्रों की चीख-पुकार की आवाज से भी घिरी हो, ईश्वर के कानों तक अवश्य पहुंच जायेगी।

"एक वैरागी का जीवन बिताना तो शरीर और आत्मा को कष्ट देना है तथा इच्छाओं का गला घोंटना है। यह एक ऐसा अस्तित्व है, जिसके मैं नितान्त विरुद्ध हूं; क्योंकि ईश्वर ने आत्माओं के मंदिर के रूप में ही शरीर का निर्माण किया है और हमारा यह कर्तव्य है कि उस विश्वास को, जो परमात्मा ने हमें प्रदान किया है, योग्यतापूर्वक बनाये रखें।

"नहीं, मेरे भाई, मैंने परमार्थ के लिए एकान्तवास नहीं अपनाया, अपनाया तो केवल इसलिए कि आदमी और उसके विधान से, उसके विचारों और उसकी शिकायतों से, उसके दुःख और विलापों से दूर रहूं।

"मैंने एकान्तवास इसलिए अपनाया कि उन मनुष्यों के चेहरे न देख सकूं, जो अपना विक्रय करते हैं और उसी मूल्य से ऐसी वस्तुएं खरीदते हैं, जो आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों ही रूप में उनसे भी घटिया हैं।

"मैंने एकान्तवास इसलिए ग्रहण किया कि कहीं उन स्त्रियों

से मेरी भेंट न हो जाय, जो अपने होंठों पर भांति-भांति की मुस्कान फैलाये गर्व से घूमती रहती हैं, जबकि उनके सहस्रों हृदयों की गहराइयों में बस एक ही उद्देश्य विद्यमान है।

"मैंने एकान्तवास इसलिए ग्रहण किया कि मैं उन आत्म-सन्तुष्ट व्यक्तियों से बच सकूं, जो अपने सपनों में ही ज्ञान की झलक पाकर यह विश्वास कर लेते हैं कि उन्होंने अपना लक्ष्य पा लिया।

"मैं समाज से इसलिए भागा कि उन लोगों से दूर रह सकूं, जो अपनी जागृति के समय में सत्य का आभास-मात्र पाकर संसार-भर में चिल्लाते फिरते हैं कि उन्होंने सत्य को पूर्णतः प्राप्त कर लिया है।

"मैंने संसार का त्याग किया और एकान्तवास को अपनाया, क्योंकि मैं ऐसे लोगों के साथ भद्रता बरतते थक गया था, जो नम्रता को एक प्रकार की कमजोरी, दया को एक प्रकार की कायरता तथा क्रूरता को एक प्रकार की शक्ति समझते हैं।

"मैंने एकान्तवास अपनाया, क्योंकि मेरी आत्मा उन लोगों के समागम से थक चुकी थी, जो वास्तव में इस बात पर विश्वास करते हैं कि सूर्य, चांद और तारे उनके खजानों से ही उदय होते हैं और उनके बगीचों के अतिरिक्त कहीं अस्त नहीं होते।

"मैं उन पदलोलुपों के पास से भागा, जो लोगों की आंखों में सुनहरी धूल झोंककर और उनके कानों को अर्थ-विहीन आवाजों से भरकर उनके सांसारिक जीवन को छिन्न-भिन्न कर

देते हैं।

"मैंने एकान्तवास ग्रहण किया; क्योंकि मुझे तबतक कभी किसी से दया न मिली, जबतक मैंने जी-जान से उसका पूरा-पूरा मूल्य न चुका दिया।

"मैं उन धर्म-गुरुओं से अलग हुआ, जो अपने धर्मोपदेशों के अनुकूल स्वयं जीवन नहीं बिताते, किन्तु अन्य लोगों से ऐसे आचरण की मांग करते हैं, जिसे वह स्वयं अपनाते नहीं।

"मैंने एकान्तवास अपनाया; क्योंकि उस महान और विकट संस्था से ही मैं विमुख था, जिसे लोग सभ्यता कहते हैं और जो मनुष्य-जाति की अविच्छिन्न दुर्गति पर एक सुरूप दानवता के रूप में छाई हुई है।

"मैं एकान्तवासी इसलिए बना कि इसीमें, आत्मा के लिए, हृदय के लिए और शरीर के लिए, पूर्ण जीवन है। अपने इस एकांतवास में मैंने वह मनोहर देश, ढूंढ़ निकाला है, जहां सूर्य का प्रकाश विश्राम करता है; जहां पुष्प अपनी सुगन्ध को अपने मुक्त श्वासों द्वारा शून्य में बिखेरते रहते हैं और जहां सरिताएं गाती हुई सागर को जाती हैं। मैंने ऐसे पहाड़ों को खोज निकाला है, जहां मैं स्वच्छ वसन्त को जागते हुए देखता हूं और ग्रीष्म की रंगीन अभिलाषाओं, शरद के वैभवपूर्ण गीतों और शीत के सुन्दर रहस्यों को पाता हूं। ईश्वर के राज्य के इस दूर कोने में मैं इसलिए आया हूं, क्योंकि विश्व के रहस्यों को जानने

और प्रभु के सिंहासन के निकट पहुंचने के लिए भी तो मैं भूखा हूं।"



यूसुफ साहब ने एक लम्बी सांस ली, मानो किसी भारी बोझ से अब मुक्ति पा गये हों। उनके नेत्र अनोखी और जादू-भरी किरणों से चमक उठे और उनके उज्ज्वल चेहरे पर गर्व, संकल्प तथा सन्तोष झलकने लगा।

कुछ क्षण ऐसे ही गुजर गये। मैं उन्हें ध्यान से देखता रहा और जो मेरे लिए अभी तक अज्ञात था, उसपर से आवरण हटता गया। मैंने उनसे कहा, "निस्संदेह आपने जो कुछ कहा, उसमें अधिकांश सही है; किन्तु लक्षणों को देखकर सामाजिक रोगों का सही अनुमान लगाने से यह प्रमाणित हो गया है कि आप एक अच्छे चिकित्सक हैं, मैं समझता हूं कि रोगी समाज को आप जैसे चिकित्सक की बड़ी आवश्यकता है, जो उसे रोग से मुक्त करे अथवा मृत्यु प्रदान करे। यह पीड़ित संसार आपसे दया की भीख चाहता है। क्या यह दयापूर्ण और न्यायोचित होगा कि आप एक पीड़ित रोगी को छोड़ जायं और उसे अपने उपकार से वंचित रहने दें?"

वह कुछ सोचते हुए मेरी ओर एकटक देखने लगे और फिर निराश स्वर में बोले, "चिकित्सक सृष्टि के आरम्भ से ही मानव को उनकी अव्यवस्थाओं से मुक्त कराने की चेष्टाएं करते आ रहे हैं। कुछ चिकित्सकों ने चीरफाड़ का प्रयोग किया और कुछ

ने ओषधियों का; किन्तु महामारी बुरी तरह फैलती गई। मेरा तो यही विचार है कि रोगी अगर अपनी मैली-कुचैली शय्या पर ही पड़े रहने में सन्तुष्ट रहता और अपनी चिरकालीन व्याधि पर मनन-मात्र करता तो अच्छा होता! लेकिन इसके बदले होता क्या है? जो भी रोगी मिलने आता है, अपने ऊपरी लबादे के नीचे से हाथ निकालकर वह रोगी उस आदमी की गर्दन से पकड़कर ऐसा धर दबाता है कि वह दम तोड़ देता है। हाय, यह कैसा अभाग्य है! दुष्ट रोगी अपने चिकित्सक को ही मार डालता है—और फिर अपने नेत्र बन्द करके मन-ही-मन कहता है, 'वह एक बड़ा चिकित्सक था।' न, भाई न, संसार में कोई भी इस मनुष्यता को लाभ नहीं पहुंचा सकता। बीज बोनेवाला कितना भी प्रवीण और बुद्धिमान् क्यों न हो, शीतकाल में कुछ भी नहीं उगा सकता!"

किन्तु मैंने युक्ति दी, "मनुष्यों का शीत कभी तो समाप्त होगा ही, फिर सुन्दर वसन्त आयेगा और तब अवश्य ही खेतों में फूल खिलेंगे और फिर से घाटियों में झरने बह निकलेंगे।"

उनकी भृकुटी तन गई और कड़ुवे स्वर में उन्होंने कहा, "काश, ईश्वर ने मनुष्य का जीवन, जो उसकी परिपूर्ण वृत्ति है, वर्ष की भांति ऋतुओं में बांट दिया होता! क्या मनुष्यों का कोई भी गिरोह, जो ईश्वर के सत्य और उसकी आत्मा पर विश्वास रखकर जीवित है, इस भू-खण्ड पर फिर से जन्म लेना चाहेगा? क्या कभी ऐसा समय आयेगा जब मनुष्य स्थिर होकर

दिव्य चेतना की दाईं ओर टिक सकेगा, जहां दिन के उजाले की उज्ज्वलता तथा रात्रि की शान्त निस्तब्धता में वह खुश रह सके ? क्या मेरा यह सपना कभी सत्य हो पायेगा ? अथवा क्या यह सपना तभी सच्चा होगा जब यह धरती मनुष्य के मांस से ढक चुकी होगी और उसके रक्त से भीग चुकी होगी ?"

यूसुफ़ साहब खड़े हो गये और उन्होंने आकाश की ओर ऐसे हाथ उठाया, मानो किसी दूसरे संसार की ओर इशारा कर रहे हों और बोले, "यह नहीं हो सकता। इस संसार के लिए यह केवल एक सपना है, किन्तु मैं अपने लिए इसकी खोज कर रहा हूं और जो मैं यहां खोज रहा हूं, वही मेरे हृदय के कोने-कोने में, इन घाटियों में और इन पहाड़ों में व्यापक है।"

उन्होंने अपने उत्तेजित स्वर को और भी ऊंचा करके कहा, "वास्तव में मैं जो जानता हूं वह तो मेरे अन्तःकरण की चीत्कार है। मैं यहां रह रहा हूं, किन्तु मेरे अस्तित्व की गहराइयों में भूख और प्यास भरी हुई है और अपने हाथों द्वारा बनाये और सजाये पात्रों में ही जीवन की मदिरा तथा रोटी लेकर खाने में मुझे आनंद मिलता है। इसीलिए मैं मनुष्यों के निवासस्थान को छोड़कर यहां आया हूं और अन्त तक यहीं रहूंगा।"

वह उस कमरे में व्याकुलता से आगे-पीछे घूमते रहे और मैं उनके कथन पर विचार करता रहा तथा समाज के गहरे घावों की व्याख्या का अध्ययन करता रहा।

तब मैंने यह कहकर ढंग से एक और चोट की, "मैं आपके

विचारों और आपकी इच्छाओं का पूर्णतः आदर करता हूं और आपके एकान्तवास पर मैं श्रद्धा भी करता हूं और ईर्ष्या भी; किन्तु आपको अपने से अलग करके अभागे राष्ट्र ने काफी नुकसान उठाया है; क्योंकि उसे एक ऐसे समझदार सुधारक की आवश्यकता है, जो कठिनाइयों में उसकी सहायता कर सके और उसकी गुप्त चेतना को जगा सके।"

उन्होंने धीमे से अपना सिर हिलाकर कहा, "यह राष्ट्र भी दूसरे राष्ट्रों की तरह ही है, और यहां के लोग भी उन्हीं तत्त्वों से बने हैं, जिनसे शेष मानव का निर्माण हुआ है। अन्तर है तो मात्र बाह्य आकृतियों का, सो कोई अर्थ ही नहीं रखता। हमारे पूर्वीय राष्ट्रों की वेदना सम्पूर्ण संसार की वेदना है और जिसे तुम पाश्चात्य सभ्यता कहते हो, वह और कुछ नहीं, उन अनेक दुखान्त भ्रामक आभासों का एक और रूप है।

"पाखण्ड तो सदैव ही पाखण्ड रहेगा, चाहे उसकी उंगलियों को रंग दिया जाय तथा चमकदार बना दिया जाय। वञ्चना कभी नहीं बदलेगी, चाहे उसका स्पर्श कितना भी कोमल और मधुर क्यों न हो जाय ! असत्यता कभी भी सत्यता में परिणत नहीं की जा सकती, चाहे तुम उसे रेशमी कपड़े पहनाकर महलों में ही क्यों न बिठा दो, और लालसा कभी सन्तोष नहीं बन सकती है। रहो अनन्त गुलामो, चाहे वह सिद्धांतों की हो, रीति-रिवाजों की हो या इतिहास की हो, सदैव गुलामी ही रहेगी, कितना ही वह अपने चेहरे को रंग ले और अपनी आवाज को

बदल ले। गुलामी अपने डरावने रूप में गुलामी ही रहेगी, तुम चाहे उसे आजादी ही कहो।

"नहीं, मेरे भाई, पश्चिम न तो पूर्व से जरा भी ऊंचा है और न जरा भी नीचा। दोनों में जो अंतर है, वह शेर और शेर-बबर के अंतर से अधिक नहीं है। समाज के बाह्य रूप के परे मैंने एक सर्वोचित और सम्पूर्ण विधान खोज निकाला है, जो सुख-दुःख और अज्ञान सभी को एक समान बना देता है। वह विधान न एक जाति को दूसरी से बढ़कर मानता है और न एक को उभारने के लिए दूसरे को गिराने का प्रयत्न करता है।"

मैंने विस्मय से कहा, "तब मनुष्यता का अभिमान झूठा है और उसमें जो कुछ भी है, वह सभी निस्सार है।"

उन्होंने जल्दी से उत्तर दिया, "हां, मनुष्यता एक मिथ्या अभिमान है और उसमें जो कुछ भी है, वह सभी मिथ्या है। आविष्कार और खोज तो मनुष्य अपने उस समय के मनोरंजन तथा आराम के लिए करता है, जब वह पूर्णतया थक गया हो। देशीय दूरी को जीतना और समुद्रों पर विजय पाना एक ऐसा नश्वर फल है, जो न तो आत्मा को संतुष्ट कर सकता है, न हृदय का पोषण और उसका विकास ही कर सकता है; क्योंकि वह विजय नितान्त अप्राकृतिक है। जिन रचनाओं और सिद्धांतों को मनुष्य कला तथा ज्ञान कहकर पुकारता है, वे बंधन की उन कड़ियों और सुनहरी जंजीरों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं, जिन्हें मनुष्य अपने साथ घसीटता चलता है और जिनके चम-

चमाते प्रतिबन्धों तथा झनझनाहट से वह प्रसन्न होता रहता है। वास्तव में वे मजबूत पिंजरे हैं, जिन्हें मनुष्य ने शताब्दियों पहले बनाना आरंभ किया था, किन्तु तब वह यह नहीं जानता था कि उन्हें वह अन्दर की तरफ से बना रहा है, और शीघ्र ही वह स्वयं वन्दी वन जायेगा—हमेशा-हमेशा के लिए। हां, हां, मनुष्य के कर्म निष्फल हैं और उसके उद्देश्य निरर्थक हैं और इस पृथ्वी पर सभी कुछ निस्सार है।"

वह जरा-से रुके और फिर धीरे-से बोलते गये, "और जीवन की इन समस्त निस्सारताओं में केवल एक ही वस्तु है, जिससे आत्मा प्रेम करती है और जिसे वह चाहती है। एक और अकेली दैदीप्यमान वस्तु !"

मैंने कंपित स्वर में पूछा, "वह क्या है ?"

निमिष-भर उन्होंने मुझे देखा और तव अपनी आंखें वंद कर लीं। अपने हाथ छाती पर रखे। उनका चेहरा तमतमाने लगा और विश्वसनीय तथा गम्भीर आवाज में बोले, "वह है आत्मा की जागृति, वह है हृदय की आन्तरिक गहराइयों का उद्बोधन। वह सब पर छा जानेवाली एक महाप्रतापी शक्ति है। जो मनुष्य-चेतना में कभी भी प्रबुद्ध होती है और उसकी आंखें खोल देती है। तब उस महान् संगीत की उज्ज्वल धारा के बीच, जिसे अनंत प्रकाश घेरे रहता है, वह जीवन दिखाई पड़ता है, जिससे लगा हुआ मनुष्य सुन्दरता के स्तम्भ के समान आकाश और पृथ्वी के बीच खड़ा रहता है।

"वह एक ऐसी ज्वाला है, जो आत्मा में अचानक सुलग उठती है और हृदय को तपाकर पवित्र बना देती है, पृथ्वी पर उतर आती है और विस्तृत आकाश में चक्कर लगाने लगती है।

"वह एक दया है, जो मनुष्य के हृदय को आ घेरती है, ताकि उसकी प्रेरणा से मनुष्य उन सबको अवाक् बनाकर अमान्य कर दे, जो उसका विरोध करते हैं और जो उसके महान् अर्थ समझने में असमर्थ रहते हैं, उनके विरुद्ध वह शक्ति विद्रोह करती है।

"वह एक रहस्यमय हाथ है, जिसने मेरे नेत्रों के आवरण को तभी हटा दिया, जब मैं समाज का सदस्य बना हुआ अपने परिवार, मित्रों और हितैषियों के बीच रहा करता था।

"कई बार मैं विस्मित हुआ और मन-ही-मन कहता रहा, 'क्या है यह सृष्टि और क्यों मैं उन लोगों से भिन्न हूं, जो मुझे देखते हैं ? मैं उन्हें कैसे जानता हूं, उन्हें मैं कहां मिला और क्यों मैं उनके बीच रह रहा हूं ? क्या मैं उन लोगों में एक अजनबी हूं अथवा वे ही इस संसार के लिए अपरिचित हैं— ऐसे संसार के लिए, जो दिव्य चेतना से निर्मित है और जिसका मुझपर पूर्ण विश्वास है ?"

अचानक वह चुप हो गये, जैसे कोई भूली बात स्मरण कर रहे हों, जिसे वह प्रकट नहीं करना चाहते। तब उन्होंने अपनी बांहें फैला दीं और फुसफुसाया, "आज से चार वर्ष पूर्व, जब मैंने संसार का त्याग किया, मेरे साथ यही तो हुआ था। इस

निर्जन स्थान में मैं इसलिए आया कि जागृत चेतना में रह सकूं और समस्वर और सौम्य नीरवता के आनंद को भोग सकूं।"

गहन अन्धकार की ओर घूरते हुए वह द्वार की ओर बढ़े, मानो तूफान से कुछ कहना चाहते हों। फिर प्रकम्पित स्वर में बोले, "यह आत्मा के भीतर की जागृति है। जो इसे जानता है, वह इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता, और जो नहीं जानता, वह अस्तित्व के विवश करनेवाले किन्तु सुन्दर रहस्यों के बारे में कभी नहीं सोच सकेगा।"



एक घण्टा बीत गया, यूसुफ़-अल-फ़ाख़री कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक लम्बे डग भरते घूम रहे थे। वह कभी-कभी रुककर तूफान के कारण अत्यधिक भूरे आकाश को देखने लगते थे। मैं खामोश ही बना रहा और उनके एकान्तवासी जीवन की दुःख-सुख की मिली-जुली तान पर सोचता रहा।

कुछ देर बाद रात्रि होने पर वह मेरे पास आये और देर तक मेरे चेहरे को घूरते रहे, मानो उस मनुष्य के चित्र को अपने मानस-पटल पर अंकित कर लेना चाहते हों, जिसके सम्मुख उन्होंने अपने जीवन के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन कर दिया हो। विचारों की व्याकुलता से मेरा मन भारी हो गया था और तूफान की धुन्ध के कारण मेरी आंखें बोझिल हो चली थीं।

तब उन्होंने शान्तिपूर्वक कहा, "मैं अब रात-भर तूफान में

घूमने जा रहा हूं, ताकि प्रकृति के भावाभिव्यंजन की समीपता का आभास कर सकूं। यह मेरा अभ्यास है, जिसका आनन्द मैं अधिकतर शरद और शीत में लेता हूं। लो, यह थोड़ी मदिरा है और यह तम्बाकू। कृपा करके आज रात-भर के लिए मेरा घर अपना ही समझो।"

उन्होंने अपने आपको एक काले लबादे से ढँक लिया और मुस्कराकर बोले, "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि सुबह जब तुम जाओ तो बिना आज्ञा के प्रवेश करनेवालों के लिए मेरे द्वार बन्द करते जाना; क्योंकि मेरा कार्यक्रम है कि मैं सारा दिन पवित्र देवदारों के वन में घूमते बिताऊंगा।"

वह द्वार की ओर बढ़े और एक लम्बी छड़ी साथ लेकर बोले, "यदि तूफान फिर कभी तुम्हें अचानक इस जगह के आसपास घूमते हुए आ घेरे, तो इस आश्रम में आश्रय लेने में संकोच न करना। मुझे आशा है कि अब तुम तूफान से प्रेम करना सीखोगे, भयभीत होना नहीं! सलाम, मेरे भाई!"

उन्होंने द्वार खोला और अन्धकार में अपने सिर को ऊपर उठाये बाहर निकल गये। यह देखने के लिए कि वे कौन-से रास्ते गये हैं, मैं देहलीज पर ही खड़ा रहा, किन्तु शीघ्र ही वह मेरी आंखों से ओझल हो गये। कुछ मिनटों तक मैं घाटी के कंकड़-पत्थरों पर उनकी पदचाप सुनता रहा।

●

गहन विचारों की उस रात्रि के पश्चात् जब सुबह हुई तब

तूफ़ान गुजर चुका था और आसमान निर्मल हो गया था। सूर्य की गर्म किरणों में मैदान और घाटियां तमतमा रही थीं। नगर को लौटते समय मैं उस आत्मिक जागृति के सम्बन्ध में सोचता जाता था, जिसके लिए यूसुफ़-अल-फ़ाखरी ने इतना कुछ कहा था। वह जागृति मेरे अंग-अंग में व्याप रही थी। मैंने सोचा कि मेरा यह स्फुरण अवश्य ही प्रकट होना चाहिए। जब मैं कुछ शान्त हुआ तो मैंने देखा कि मेरे चारों ओर पूर्णता और सुन्दरता बसी हुई है।

जैसे ही मैं उन चीख़ते-पुकारते नगर के लोगों के पास पहुंचा, मैंने उनकी आवाजों को सुना और उनके कार्यों को देखा, तो मैं रुक गया और अपने अन्तःकरण से बोला, "हां, आत्मबोध मनुष्य के जीवन में अति आवश्यक है और यही मानव-जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। क्या स्वयं सभ्यता अपने समस्त दुःख-पूर्ण बहिरंग में आत्मिक जागृति के लिए एक महान ध्येय नहीं है? तब हम किस प्रकार ऐसे पदार्थ के अस्तित्व से इन्कार कर सकते हैं, जिसका अस्तित्व ही अभीप्सित योग्यता की समानता का पक्का प्रमाण है। वर्तमान सभ्यता चाहे नाशकारी प्रयोजन ही रखती हो, किन्तु ईश्वरीय विधान ने उस प्रयोजन के लिए एक ऐसी सीढ़ी प्रदान की है, जो स्वतन्त्र अस्तित्व की ओर ले जाती है।

●

मैंने फिर कभी यूसुफ-अल-फाख़री को नहीं देखा, क्योंकि

मेरे अपने प्रयत्नों के कारण, जिनके द्वारा मैं सभ्यता की बुराइयों को दूर करना चाहता था, उसी शरद ऋतु के अन्त में मुझे उत्तरी लेबनान से देश-निकाला दे दिया गया और एक ऐसे दूर-देश में प्रवासी का जीवन बिताना पड़ा, जहां के 'तूफान' बहुत कमज़ोर हैं, और उस देश में एक आश्रमवासी का-सा जीवन बिताना एक अच्छा-खासा पागलपन है, क्योंकि यहां का समाज भी बीमार है। ○

२ | सदियों की राख

रात हो चुकी थी और चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। सूर्यनगर[1] में चेतना ऊंघ रही थी। जैतून और लारेल के वृक्षों के बीच भव्य मन्दिरों के चारों ओर बिखरे हुए मकानों में दिये बुझ चुके थे। संगमरमर के स्तम्भों को, जो रात्रि की निस्तब्धता में भूतों की तरह खड़े ईश्वर के मन्दिरों की रक्षा कर रहे थे, चन्द्रमा अपनी रुपहली किरणों से नहला रहा था और व्यग्रता से लेबनान के उन मीनारों को देख रहा था, जो दूर पहाड़ियों के मस्तक पर खड़े मानो चुनौती दे रहे थे।

उस समय, जबकि आत्माएं निद्रा के प्रलोभन से वशीभूत थीं, बड़े पुजारी के लड़के नाथन ने इश्तार के मन्दिर में प्रवेश किया। उसके कांपते हाथों में एक मशाल थी। उसने तबतक दीपक और धूपबत्तियां जलाये रखीं जबतक उनकी सुगन्ध कोने-कोने तक में न फैल गई। फिर वह देवमूर्ति के सम्मुख घुटनों के बल बैठ गया। देवमूर्ति हाथीदांत तथा सोने की

---

१. 'वालवेक' अथवा 'वालनगर' पुराने जमाने में सूर्यनगर के नाम से प्रसिद्ध था। यह नगर सूर्यदेव हीलिओ पोलिश के सम्मान में वनाया गया था।

पच्चीकारी के आभूषणों से सुसज्जित थी। नाथन ने तब इश्तार की ओर अपना हाथ उठाया और दर्द-भरी और घुटती हुई आवाज में बोला, "मुझ पर दया कर, हे महान् इश्तार! प्रेम और सुन्दरता की देवी! मुझ पर दया कर और मृत्यु के हाथों को मेरी प्रेमिका पर से दूर हटा ले। मैंने उसे तेरी इच्छा से सुना है। हकीमों की औषधियां तथा ओझों की झाड़-तावीजें उसको जीवन-दान नहीं दे सकीं। न मायावियों अथवा पुजारियों की प्रार्थना ही कुछ काम आई। तेरी पवित्र इच्छा को छोड़कर अब और कुछ भी करने को शेष नहीं रहा है। अब तू ही मेरी पथ-प्रदर्शिका और सहायिका है। मुझ पर दया कर और मेरी प्रार्थनाएं स्वीकार कर। मेरे भग्न हृदय और क्षुब्ध आत्मा की ओर देख, और मेरी प्रेमिका के जीवन को बचा ले, ताकि हम तेरे प्रेम-रहस्यों का आनंद ले सकें और तेरी शक्ति और सर्वज्ञता का रहस्योद्घाटन करने वाले यौवन के सौंदर्य की छटा को देख सकें। हे महान् इश्तार! अपने हृदय की गहराइयों से मैं पुकारता हूं और अंधकार की भीषणता में तेरी दया चाहता हूं। महान् इश्तहार, मेरी पुकार सुन! मैं तेरा अच्छा सेवक नाथन हूं—श्रेष्ठ पुजारी हिरम का बेटा, और मैं अपने सभी कर्मों और वचनों को तेरी ही महानता के प्रति समर्पित करता हूं।

"सभी युवतियों में मैंने केवल एक युवती से प्यार किया और उसे अपना जीवन-साथी बनाया। किंतु प्रेत-बधुएं[1] उससे

१. किसी जमाने में अरबों में यह विश्वास था कि यदि एक प्रेत- वधू

ईर्ष्या करने लगीं। उन्होंने उसके शरीर में एक अजीब-सी पीड़ा पैदा कर दी और मृत्यु-दूत को उसके पास भेज दिया, जो उसकी शैया के सिरहाने एक भूखे शिकारी की भांति खड़ा अपने काले पंख फैलाये पंजों को उसपर तेज करने को तैयार बैठा है। अब मैं यहां तुमसे प्रार्थना करने आया हूं। मुझपर दया कर और एक ऐसे फूल की रक्षा कर, जो अभी जीवन की उष्णता के साथ खेला तक भी नहीं है।

"मृत्यु के पंजे से उसकी रक्षा कर, ताकि हम खुशी-खुशी तेरा स्तुति-गान कर सकें, तेरे सम्मान में तेरी प्रतिमा पर बलि चढ़ा सकें, धूप जला सकें, तेरे पूजा-मण्डप के बरामदे पर गुलाब तथा नील कमलों की सेज बिछा सकें और तेरी पवित्र समाधि को धूपवत्ती से सुरभित कर सकें। उसे बचा ले, हे चमत्कारों की देवी, और इस दुःख के विरुद्ध सुख के संघर्ष में मृत्यु पर प्रेम की विजय होने दे।"

इतना कहकर नाथन चुप हो गया। उसकी आँखें सजल थीं और उसका हृदय दर्दभरी आहें भर रहा था। वह फिर प्रार्थना करने लगा, "हां, मेरी कल्पना छिन्न-भिन्न हुई, देवी इश्तार, मेरा हृदय भीतर-ही-भीतर घुल रहा है। अपनी दया

(युवा प्रेतात्मा) किसी युवक से प्रेम करने लगती है तो वह उसे विवाह करने से रोकती है। यदि वह विवाह कर लेता है तो वह वधू को मार डालती है।

से मेरी प्रेयसी को बचाकर मुझे जीवन-दान दे ।"

उसी समय नाथन के गुलामों में से एक ने मन्दिर में प्रवेश किया और जल्दी से नाथन के पास आकर उसके कानों में फुसफुसाया, "उन्होंने अपनी आंखें खोल दी हैं प्रभु, और बिछौने के चारों ओर देखकर जब आप उन्हें दीखे नहीं तो वह आपको पुकारने लगीं। मैं दौड़ा-दौड़ा आपको यही संदेश देने आया हूं।"

नाथन जल्दी से बाहर निकल आया और उसके पीछे-पीछे गुलाम भी चल पड़ा।

जब वह अपने मकान पर पहुंचा तो उसने रुग्ण युवती के शयन-कक्ष में प्रवेश किया और उसकी शैया पर झुककर उसका रक्तहीन पीला हाथ अपने हाथों में ले लिया। उसके होंठों पर कई चुम्बन अंकित कर दिये, मानो वह अपने जीवन में से उसमें नव-जीवन फूंकने का प्रयत्न कर रहा हो। तब युवती ने रेशमी गद्दे पर अपना सिर हिलाया और अपने नेत्र खोले। उसके होंठों पर मधुर मुस्कान फैल गई, जो उसके जीर्ण शरीर में चेतना का एक क्षीण अवशेष मात्र थी। वह हार्दिक पुकार की एक ऐसी प्रतिध्वनि थी, जो विश्राम की ओर दौड़ रही हो। फिर एक ऐसी आवाज़ में, जो एक कमजोर मां के स्तन पर पड़े हुए बच्चे के क्षीण चीत्कारों को भी जड़ बना देती है, वह बोली, "देवी ने मुझे बुलाया है और मुझे तुमसे अलग करने के लिए मृत्यु आ गई है। किंतु डरो नहीं, देवी की इच्छा पवित्र

है और मौत की मांग जायज है। मैं अब विदा हो रही हूं और आकाश से उतरती हुई मौत की फड़फड़ाहट को सुन रही हूं। लेकिन प्रेम और यौवन के पात्र हमारे हाथों में अभी भी भरे हुए हैं और जीवन के फूलों से भरे रास्ते हमारे सामने अभी फैले हुए हैं। मेरे प्रियतम ! आत्मा की कमान पर मैं चढ़ रही हूं, किन्तु मैं फिर इस संसार में वापस आऊंगी, क्योंकि जो प्रेमी आत्माएं प्रेम की मृदुता तथा यौवन के आनन्द का उपभोग करने के पहले ही अनन्त में समा जाती हैं, उन्हें महान् इश्तार फिर जन्म[1] देती है।

"हम फिर मिलेंगे, मेरे नाथन ! और कुमुद की पंखुड़ियों के प्यालों में प्रभात की ओस साथ-साथ पियेंगे और सतरंगी इन्द्र-धनुष के ऊपर-ही-ऊपर मुक्त क्षेत्रों में घूमनेवाले पक्षियों के साथ आनन्द करेंगे। तबतक के लिए चिर विदा !"

उसकी आवाज क्षीण पड़ती गई और उसके होंठ उस एक अकेले फूल की तरह कांपने लगे, जो प्रभात के पवन-झकोरों से हिल रहा हो। आंसू बहाते हुए नाथन ने उसका आलिंगन किया और जैसे ही उसने अपने होंठों को उसके होंठों पर रक्खा, उसने अनुभव किया कि वे होंठ एक शिला की भांति ठंडे हो चुके हैं। उसके मुंह से एक भयंकर चीख निकल पड़ी और वह अपने वस्त्रों को फाड़ने लगा। वह उसके मृत शरीर पर गिर पड़ा, जब कि

---

१. अरब के लोग पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।

उसकी कांपती आत्मा जीवन के पहाड़ और मृत्यु की खाई के बीच आवेश में तैर रही थी।

इश्तार के बड़े पुजारी के भवन के कोने-कोने से बड़ी विकट गड़गड़ाहट, कष्टदायक क्रंदन तथा कठोर रुदन की आवाजें जब सुनाई दीं तो रात्रि की निस्तब्धता में निद्रित आत्माएं जाग उठीं। स्त्रियां और बच्चे भयाक्रांत हो उठे।

और जब विश्रांत प्रभात जागा और लोग नाथन से संवेदना प्रकट करने गये तो उन्हें बताया गया कि वह वहां नहीं है। एक पखवाड़े के बाद पूर्व से आये हुए एक कारवां के सरदार ने बताया कि उसने नाथन को दूर वीरानों में देखा है। वह मृगों के झुण्ड के साथ भटकता फिर रहा था।

अदृश्य पैरों से सभ्यता के दुर्बल शरीर को कुचलती हुई सदियां गुजर गईं। तब प्रेम और सौंदर्य की देवी ने देश को त्याग दिया था और एक अद्‌भुत और चंचल देवी ने उसका स्थान ग्रहण किया। उसने सूर्यनगर के सभी भव्य मन्दिरों को नष्ट कर दिया और उसके सुन्दर भवनों को ध्वस्त कर दिया। खिली हुई वाटिकाएं और उपजाऊ मैदान उजड़े पड़े हुए थे। वहां उन भग्नावशेषों के सिवा कुछ भी शेष न रहा था, जो पीड़ित आत्माओं को अतीत के प्रेतों की याद दिला रहे थे और जो इस प्रकार उन्हें पुरातन भव्यता की महत्ता को प्रतिध्वनित कर रहे थे।

किन्तु निर्मम कालात्मा, जिसने आदमी की मेहनत को तो

कुचल दिया, उसके स्वप्नों को नष्ट न कर सकी, न उसके प्रेम को मंद कर सकी, क्योंकि स्वप्न और स्नेह अनन्त आत्मा के साथ ही अमर हैं। वे थोड़ी देर के लिए उसी तरह तिरोहित हो सकते हैं, जैसे सूर्य का पीछा करते हुए रात आती है अथवा सितारों का पीछा करते हुए प्रभात होता है, किन्तु आकाश के प्रकाश की भांति वे अवश्य ही वापस लौट आते हैं।



अनेक वर्ष बाद।

दिन बीत चुका था और प्रकृति सोने के लिए भांति-भांति की तैयारियां कर रही थी। सूर्य ने वालबेक नगर के मैदानों पर से अपनी सुनहरी किरणें समेट ली थीं। अली-अल-हुसैन अपने पशुओं को मंदिरों के खण्डहरों के बीच झोंपड़ी में ले आया। वह उन प्राचीन मीनारों के समीप बैठ गया, जो युद्ध में मारे गये अनगिनत सिपाहियों के अस्थि-पिंजरों के समान खड़ी हुई थी। उसकी बांसुरी के राग से मुग्ध होकर भेड़ों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। रात आधी से भी ज्यादा बीती और आकाश ने आनेवाले दिन के बीज अन्धकार की गहरी लीकों में बो दिये।

अली की आंखें जाग्रत अवस्था में ही सपने देखते-देखते थक गई थीं और भयानक निस्तब्धता में टूटी हुई दीवारों पर से भूतों के जुलूस को गुजरते देख उसका मस्तिष्क परेशान हो उठा था। वह अपनी बांह के सहारे झुक गया और जरा देर

बाद ही निद्रा ने अपने मीठे आवरण के अन्तिम छोर से उसको ढक लिया—एक कोमल बादल की भांति, जो एक शांत झील को छू रहा हो। वह अपने को भूल गया और अपनी ही अदृश्य सत्ता में खो गया।

वहां उसने गहरे स्वप्न तथा मनुष्य के सिद्धान्तों और विधानों से भी ऊंचे विचारों को पाया। उसका दृष्टिपटल फैल गया और जीवन के गुप्त रहस्य उसे दृष्टिगोचर होने लगे। उसकी आत्मा ने समय की दौड़ को, जो कि शून्य की ओर भागी जा रही थी, छोड़ दिया। वह अकेला ही समान विचारों तथा स्पष्ट भावनाओं के बीच खड़ा था।

जीवन में पहली बार उसे रूहानी अकाल के कारणों का पता चला, जो सदैव उसके यौवन के अंग रहे—वह अकाल, जो जीवन की कटुता और मिठास के बीच की खाई को पाट देता है; वह प्यास, जो प्रेम की आहों और तृप्ति के मौन को संतोष के साथ जोड़ देती है; वह अभिलाषा, जो संसार की भव्यता से पराजित नहीं हो सकती, न सदियों के गुजरने से बदल सकती है।

अतः उसने अपने अन्तर में एक अद्भुत स्नेह और एक दयापूर्ण कोमलता की विशाल लहर का अनुभव किया। वह एक स्मरण-शक्ति थी, जो श्वेत लकड़ी पर रक्खी हुई एक धूपबत्ती के समान स्वयं ही उत्तेजित हो रही थी। वह एक अद्भुत जादूभरा प्रेम था, जिसकी कोमल उंगलियों ने अली के हृदय को छू

लिया था, जैसे एक संगीतकार की कोमल उंगलियां कांपते हुए तारों को छू लेती हैं। शून्य में से उत्पन्न होकर तेजी से बढ़ने वाली वह एक नवशक्ति थी, जो अपनी वास्तविकता से गले मिल रही थी और आत्मा को पूर्ण प्रेम से भेंट रही थी, जिससे एकसाथ कष्ट तथा सुख का अनुभव होता था।

अली ने खंडहरों की ओर देखा और जब उसने उन गौरव-पूर्ण किन्तु उजड़ी समाधियों और मन्दिरों पर दृष्टि डाली, जो अभी भी उसी शान-शौकत तथा अदम्यता से खड़े थे, जैसे कि बहुत समय पूर्व रहे होंगे, उसकी भारी आंखें चमक उठीं। उसकी पलकें रुक गईं और हृदय की धड़कन तेज हो गई। एक अन्धे आदमी की तरह, जिसकी ज्योति अचानक लौट आई हो, वह देखने और सोचने-विचारने लगा।

उसने उन वत्तियों तथा चांदी के पात्रों को स्मरण किया, जो उस सर्व-शक्तिदायनी अलंकृत और सर्वप्रिय देवी की मूर्ति को चारों ओर से घेरे रहते होंगे। उसने उन पुजारियों का स्मरण किया, जो हाथीदांत तथा स्वर्ण की बनी हुई यज्ञ-देवी पर बलि चढ़ाते होंगे। उसे वे नर्तकियां, वादक तथा गायक दिखाई पड़े, जो प्रेम और सौन्दर्य की देवी की स्तुति में गाते-बजाते होंगे। उसने यह सब अपने सम्मुख खड़े पाया और अपने मानस की अनन्त गहराइयों में उनकी गूढ़ता का अनुभव किया।

किन्तु अकेली स्मृति कुछ भी नहीं, वह तो बीते समय की गहराइयों में सुनी आवाजों की प्रतिध्वनि मात्र है। इन प्रबल

उलझी स्मृतियों और उस सरल युवक की यथार्थ आपबीती में यह विषम नाता कैसा, जिसने जन्म तो लिया हो तम्बू में और जीवन का मधुमास घाटियों में रेवड़ चराते बिताया हो ?

अली ने अपने आपको संयत किया और खंडहरों में घूमने लगा। कष्टप्रद स्मृतियों ने अचानक उसके विचारों पर से विस्मृति के आवरण को चीर दिया। ज्योंही वह कन्दराओं में बने बड़े मन्दिर के प्रवेश-द्वार पर पहुंचा, रुक गया, मानो किसी चुम्बकीय शक्ति ने उसे पकड़ लिया हो और उसके पैरों को जकड़ लिया हो। उसने ज्योंही नीचे की ओर देखा, उसे भग्न प्रतिमा पृथ्वी पर पड़ी दिखाई दी। एकबारगी अदृश्य की जकड़ से छूट गया। उसकी आत्मा के आंसुओं का बांध टूट पड़ा और वे इस प्रकार बहने लगे, मानो एक गहरे घाव से रक्त की धार फूट रही हो। उसका हृदय उत्थान और पतन में सागर की विशाल लहरों की भांति गरजने लगा। उसने एक कड़ुवी आह भरी और दर्दभरी आवाज में वह चिल्ला उठा, क्योंकि उसने अनुभव किया कि दुखद एकांत और विनाशक दूरी उसे उसकी प्यारी प्रियतमा से अलग करनेवाली खाई के रूप में विद्यमान है, जो उसके जीवन में पदार्पण करने से पहले ही उससे छिन गई थी। उसे अनुभव हुआ कि उसका आत्मतत्व एक ऐसी अग्नि-शिखा है, जो ईश्वर ने सदियों पहले ही अपने से अलग कर दी थी। उसे अनुभव हुआ कि मुलायम पंखों ने उसे अपनी कोमलता से छुआ है और वे उसके हृदय की ज्वाला के चारों ओर

फड़फड़ा रहे हैं तथा यह एक महान् प्रेम के अधीन है—वह दिव्य प्रेम, जिसकी शक्ति मन को मान-परिमाण की इस दुनिया से अलग रखती है; प्रेम—जो कि चेतना के मूक हो जाने पर मुखर हो उठता है, जो एक नीले आकाशदीप के समान खड़ा रहकर रास्ते की ओर संकेत भर करता है और अदृश्य प्रकाश के द्वारा ही मार्ग दिखाता है; उस प्रेम अथवा ईश्वर ने, जिसने अली के हृदय में उस एकान्त घड़ी में प्रवेश किया, उसकी सत्ता में एक कटु किन्तु मधुर स्नेह के बीज बो दिये, ऐसे कांटों की तरह, जो विकसित पुष्पों के साथ-साथ बढ़ते जाते हैं।

किन्तु यह प्रेम क्या ? यह कब आया था ? और यह एक चरवाहे से, जो उन खंडहरों के बीच घुटनों पर सिर रक्खे पड़ा है, क्या चाहता है ? क्या यह कोई बीज है, जो अनजाने ही किसी रूपसी ने हृदय के राज्य में बो दिया था ? अथवा यह कोई रश्मि है, जो काले बादलों के पीछे से जीवन को ज्योतिर्मय करने के निमित्त प्रकट हुई है ? क्या यह कोई सपना है, जो उपहास करने के हेतु रात्रि की निस्तब्धता में उसके निकट रेंगता रहा है ? अथवा यह कोई सत्य है, जो सृष्टि के आरम्भ से है और अन्त तक रहेगा।

अली ने अपने आंसू-भरे नेत्र मूंद लिये और अपने हाथों को बाहर फैलाकर भिखारी की तरह बड़बड़ाने लगा, "कौन हो तुम, जो मेरे हृदय के इतने पास हो, लेकिन दिखाई नहीं देते ? फिर भी मेरे और मेरी वास्तविक सत्ता के बीच दीवार बनकर

खड़े हो और मेरे वर्तमान को विस्मृत भूतकाल से जोड़े हुए हो? क्या तुम अनन्त के उस अदृश्य का आभास हो, जो मुझे जीवन के मिथ्याभिमान तथा मानव की दुर्बलता से परिचित करा रहा है? अथवा तुम कोई प्रेतात्मा हो, जो पृथ्वी की दरारों में से निकल कर मुझे गुलाम बनाना चाहती है, और मेरे गिरोह के युवकों के सामने मुझे उपहास-पात्र बनाना चाहती है? तुम कौन हो और वह कौन-सी अद्भुत शक्ति है, जो एकसाथ मेरे हृदय को मारती भी है और जिलाती भी? मैं कौन हूं, और वह कौन-सी अद्भुत सत्ता है, जिसे मैं 'अहं' कहता हूं? क्या चेतना की रसधार ने, जिसे मैंने पिया है, मुझे एक देवदूत बना दिया है, जो मैं विश्व के रहस्यपूर्ण भेदों को देख-सुन रहा हूं? या यह मात्र एक कुत्सित मदिरा है, जिसने मुझे भरमाया है और अपनी सत्ता को पहचानने तक से अन्धा बनाया है?"

वह चुप हो गया, किन्तु उसका चिन्तन बढ़ता ही गया और उसकी आत्मा बहुत आनंदित हो गई। वह फिर बोला, "ओह, जिसे आत्मा प्रकट करती है और रात्रि छिपाये रहती है, ऐसी ए सुन्दर आत्मा! तू तो मेरे स्वप्नों के आकाश में चक्कर लगा रही है। तूने मेरे अन्तरतम में, बर्फ के कम्बल के नीचे छिपे हुए स्वस्थ बीजों के समान, एक सुप्त पूर्णता को जगा दिया है। तू अठखेलियां करती हुई समीरण के समान मेरे पास से गुजरती है, साथ में दिव्य पुष्पों की सुगन्ध लिये, जो मेरी क्षुधित सत्ता को सुरभित कर देती है। तूने मेरी भावनाओं को

छू दिया है, और उनमें हलचल भर दी है। तूने उसे वृक्षों की पत्तियों के समान हिला दिया है। यदि तू एक मनुष्य है, तो अब मुझे अपने को देखने दे, अथवा मुझे निद्रा पर विजय पाने दे, जिससे मैं नेत्र बन्द करके अपनी अन्तरात्मा द्वारा तेरी विशालता को परख सकूं। मुझे अपने को छूने दे, अपनी वाणी सुनने दे। इस आवरण को चीर के रख दे, जो मेरे समस्त ध्येय को छिपाये हुए है और इस दीवार को ढा दे, जो मेरे देवता को मुझे देखने में बाधक बनी खड़ी है। मुझे परों का एक जोड़ा प्रदान कर, जिससे मैं तेरे पीछे सृष्टि के उच्चतम भवनों में जा सकूं अथवा मेरी आंखों को जादू कर दे, जिससे यदि तू किसी प्रेतात्मा की वधू है, तो मैं उन प्रेतों की झोंपड़ियों तक तेरे साथ चल सकूं, जहां तेरा निवासस्थान है। यदि मैं इस योग्य हूं तो मेरे हृदय पर हाथ रख दे, और मुझे स्वीकार कर।"

उस रहस्यमय अन्धकार के बीच अली फुसफुसा रहा था कि उसके सम्मुख रात्रि की प्रेतात्मा रेंगती चली आई। ऐसा लगता था, मानो गर्म-गर्म आंसुओं से भाप उठ रही हो। मंदिर की दीवारों पर इन्द्रधनुषी कूंची से रंजित जादुई चित्रों की उसे झलक दिखाई दी। इस प्रकार अली को आंसू बहाते तथा अपनी दुखित अवस्था पर बड़बड़ाते एक घंटा बीत गया। वह अपने हृदय की धड़कन सुनता रहा और दूर लौकिक वस्तुओं के पार देखता रहा, जैसे वह चेतना की मूर्तियों को धीरे-धीरे लुप्त होते और उनके स्थान पर अनुपम सौन्दर्यपूर्ण किन्तु पापमय

स्वप्नों को आते देख रहा हो, उस पैगम्बर की तरह, जो दिव्य वाणी के लिए आसमानी सितारों की ओर चिन्तापूर्वक घूरता है। वह विचारों से परे की उस सत्ता पर ध्यान लगाये रहा। उसने अनुभव किया कि उसकी आत्मा उसे छोड़ चुकी है और वह उन मन्दिरों में भटकती फिर रही है—सम्भवतः उसकी सत्ता के एक अमूल्य किन्तु अज्ञात भाग को ढूंढ़ती हुई, जो उन खंडहरों में कहीं खो गया है।

प्रभात हो चला था और वायु के चलने से निस्तब्धता भंग हो रही थी। आकाश के कणों को प्रकाशित करती हुई ज्योति की प्रथम किरणें दौड़ रही थीं और आकाश एक स्वप्नद्रष्टा की भांति अपनी प्रेमिका की छाया को देखकर मुस्करा रहा था। पक्षी अपने घोंसलों से निकल-निकलकर दीवारों की दरारों तथा ऊंची मीनारों वाले भवनों में चहकने लगे थे और प्रातः की प्रार्थनाओं के गाने में लीन थे।

अली ने अपने कांपते हुए हाथ को माथे पर रखा और अपनी चमकती हुई आंखों से नीचे की ओर ताकने लगा। उसने नई और अनोखी वस्तुएं उसी प्रकार देखीं, जिस प्रकार आदम ने परमात्मा से चेतना पाकर सर्वप्रथम आंखें खोलते समय देखी थीं। फिर वह अपनी भेड़ों के पास जा पहुंचा और उन्हें एक हांक दी। वे भेड़ें जल्दी से हरे-भरे मैदानों की ओर उसके पीछे हो लीं। वह उन्हें हांके ले चला; किन्तु आकाश की ओर उस दार्शनिक की तरह सोचता हुआ देखता जाता था,

जो विश्व के रहस्यों में डूब गया हो और उनके बारे में सोच रहा हो। वह एक झरने के निकट पहुंचा, जिसकी कलकल ध्वनि आत्मा को शान्ति प्रदान कर रही थी। वह उसी के किनारे सरई के एक वृक्ष के नीचे बैठ गया, जिसकी शाखाएं पानी की सतह पर डुबकी लेती हुईं मानो शीतल गहराइयों में से पानी पी रही हों। प्रातः की ओस हरी-हरी घास और फूलों के बीच चरती हुई भेड़ों के बालों पर दमक रही थी।

थोड़ी देर बाद ही अली को फिर लगा कि उसके दिल की धड़कनें तेज हो रही हैं और उसकी आत्मा ने इस तेजी से कांपना आरम्भ कर दिया है, मानो नेत्रों से साफ दिखाई दे रहा हो। जिस प्रकार एक मां अपने बच्चे की चीख सुनकर एकबारगी अपनी निद्रा से चौंक जाती है, वह भी अपने स्थान से उछल पड़ा और ज्योंही उसकी दृष्टि एक ओर आकर्षित हुई, उसने देखा कि एक सर्वांग सुन्दरी अपने कन्धे पर एक गागर रखे धीरे-धीरे झरने के उस पार जा रही थी। जब वह किनारे पर पहुंची और गागर भरने के लिए झुकी, उसने उसपर दृष्टि डाली। उसके नेत्र अली के नेत्रों से जा टकराये। वह पागल-सी चीख उठी। गागर उसके हाथ से छूट गई और जल्दी से उसने आंखें फेर लीं। तब वह फिर अली की ओर चिंतित और क्षुब्ध अविश्वास-भरी दृष्टि से देखती हुई मुड़ी। एक क्षण बीता, किन्तु उस क्षण के एक-एक अंश ने उनकी आन्तरिक ज्योतियां प्रकाशमान कर दीं और उस नीरवता ने उनकी अस्पष्ट

स्मृतियों में कुछ ऐसी प्रतिमाएं और दृश्य उपस्थित किये, जो उस झरने और वृक्षों से बहुत दूर थे।

उस निस्तब्धता में उन्होंने एक-दूसरे को सुना, आंसुओं में भीगे हुए वे एक-दूसरे के हृदय और आत्मा की आवाजों को समझते रहे, जबतक कि दोनों एक-दूसरे को पूर्णतः पहचान न पाये।

अली उस समय किसी दिव्यशक्ति के वशीभूत हो झरने को कूदकर युवती के पास जा पहुंचा। उसने उस सुन्दरी का आलिंगन किया और एक लम्बा गहरा चुम्बन उसके अधरों पर अंकित कर दिया। मानो अली के आलिंगन के माधुर्य ने उस युवती की इच्छा पर अधिकार जमा लिया हो, वह किंचितमात्र भी न हिली, न डुली। वास्तव में अली को बाहुओं के मनोहर स्पर्श ने सुन्दरी की शक्ति को चुरा लिया था। जैसे चमेली के पुष्प की सुगन्ध वायु की तरंगों को अंगीकार कर लेती है और विस्तीर्ण नभमण्डल में बह जाती है, वैसे ही उस युवती ने भी अपने को अली में समाहित दिया।

एक अत्यन्त पीड़ित व्यक्ति के समान, जिसने अब आश्रय पा लिया हो, उसने अपना सिर अली के वक्षस्थल पर रख दिया। उसने एक गहरी आह भरी—एक ऐसी आह, जो दुखी हृदय को प्रसन्नता का संदेश सुनाती है, और उन पंखों के फिर उभर आने की क्रान्ति-घोषणा करती है, जो कभी घायल हो गये थे, जिससे आकाशचारी को धराशायी होना पड़ा था।

युवती ने अपना सिर ऊपर उठाया और अपने आत्मचक्षुओं से अली की ओर निहारा—यह वह दृष्टि थी, जो पूर्ण निस्तब्धता में भी मनुष्य-जाति द्वारा प्रयुक्त शब्दों को तुच्छ बना देती है, एक ऐसी वाक्य-शैली, जो हृदय की मूक भाषा में सहस्रों विचार प्रदान करती है। उसकी दृष्टि एक ऐसे व्यक्ति की थी, जो प्रेम के ढांचे में उत्तेजना-मात्र नहीं समझता, अपितु उन दो आत्माओं का एक पुनःसंयोग समझता है, जो बहुत समय बाद हुआ हो, मानो वे पृथ्वी द्वारा अलग कर दी गई थीं और अब ईश्वर द्वारा मिला दी गई हैं।

भेड़ों का चरना जारी था। आकाश में चिड़ियां अब भी उनके सिरों पर चक्कर काट रही थीं और रात्रि की नीरवता का पीछा करती हुई प्रभात के गीत गा रही थीं। जब वह घाटी के अन्त तक पहुंचे तो सूर्य निकल आया था और उसने पहाड़ियों और घाटियों पर सुनहरी चादर फैला दी थी। वे एक पत्थर के किनारे पर बैठ गये, जहां नील कमल छिपे हुए थे। युवती अली की काली आंखों में झांक रही थी और वायु के झोंके उसकी लटों के साथ दुलार कर रहे थे। उसे ऐसा अनुभव हुआ, मानो उसकी इच्छा के होने पर भी कोई जादू और दृढ़ सौम्यता उसके होंठों को छू रही है। शांत और मधुर स्वर में उसने कहा, "प्रिय ! इश्तर ने हम दोनों के जीवन का इस पृथ्वी पर पुनः स्थापन किया है, इसलिए कि हम प्रेम के सुख और यौवन की शोभा से वंचित न रहें।"

अली ने अपनी आंखें मूंद लीं, मानो सुन्दरी के संगीतमय स्वर ने उसके सम्मुख उन स्वप्नों के दृश्य ला दिये हों, जो कभी उसने देखे थे। उसे लगा कि पंखों के एक अदृश्य जोड़े द्वारा वह उस स्थान से उड़ाकर वहां ले जाया गया है, जहां एक शैया पर सुन्दरी का शव लेटा हुआ है और जिसकी सुन्दरता पर मृत्यु ने अधिकार जमा लिया है। वह भय के कारण चिल्ला उठा, फिर उसने अपनी आंखें खोल दीं और देखा कि यही सुन्दरी उसी के पास बैठी हुई है और उसके होठों पर एक मुस्कान फैल गई।

सुन्दरी के नयनों से जीवन की किरणें फूट रही थीं। अली का चेहरा दमक उठा और उसका हृदय प्रफुल्लित हो गया। उसकी कल्पना का भूत धीरे-धीरे दूर हो गया, और वह अतीत और अतीत के दुखों को पूर्णतः भूल गया।

दोनों प्रेमी आलिंगन-पाश में बंध गये और वे मीठे चुम्बनों की मदिरा तबतक पीते रहे जबतक कि रस-विभोर नहीं हो पाये। एक-दूसरे के बाहु-पाश में बंधे वे गहरी निद्रा में लीन हो गये और तबतक सोते रहे जबतक दिव्यशक्ति ने, जिसने उन्हें जगाया था, अन्धकार का अन्तिम निशान तक न मिटा दिया। ○

३ | सीरिया का अकाल

[देश निकाले के बाद सीरिया के अकाल के समय लिखा गया है।]

मेरे देशवासी मर चुके, किन्तु मैं अब भी जीवित हूं और देश से दूर एकान्तवास में उन मरनेवालों का शोक मना रहा हूं।

मेरे मित्र मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, और मेरा जीवन उनकी मृत्यु मात्र से एक बृहत् अभाग्य बनकर रह गया है।

मेरे देश की पहाड़ियां आंसू और रक्त में डूबी हुई हैं, क्योंकि मेरे लोग और मेरे प्रिय इस संसार से उठ चुके हैं, और मैं यहां उसी प्रकार जीवित हूं, जैसे कि मैं तब था जब मेरे लोग और मेरे प्रिय बंधु जीवन और जीवन की उदारता का आनन्द लूट रहे थे, और जब मेरे देश की पहाड़ियां सूर्य के प्रकाश में प्रसन्न और सम्पूर्णतः डूबी रहती थीं।

मेरे देशवासी भूखे मर गये और वह जो क्षुधा से पीड़ित होकर नहीं मरा, तलवार के घाट उतार दिया गया। और मैं हूं कि यहां इस दूर देश में उन सम्पन्न लोगों में भटक रहा हूं, जो कोमल गद्दों पर सोते हैं और अपने अच्छे दिनों पर हंसते हैं, जबकि समय भी उनके अनुकूल है। 1994

मेरे देशवासी एक यातनामय और लज्जाजनक मौत मरे,

और मैं यहां समृद्धि तथा शान्ति के बीच रह रहा हूं। यह अत्यन्त शोकपूर्ण नाटक है, जो इससे पहले कभी मेरे हृदय के रंग-मंच पर नहीं खेला गया। बहुत कम लोग होंगे, जो इस नाटक को देखने की परवा करेंगे, क्योंकि मेरे देशवासी तो अब ऐसे पक्षी के समान हैं, जिसके पर टूट चुके हैं और जो अपने साथियों से पिछड़ चुका है।

यदि मैं भी भूखा होता और अपने क्षुधा-पीड़ित लोगों के साथ रहता होता और ठुकराये गए अपने देशवासियों के साथ दुःख भोगता तो मेरे अशान्त सपनों में दुःखभरे दिनों का बोझ कुछ हलका हो जाता, और मेरी गड्ढे में धंसी आंखों, चीखते हुए हृदय और आहत आत्मा के सम्मुख रात्रि की गूढ़ता कुछ कम अन्धकारमय हो जाती; क्योंकि वह, जो अपने देशवासियों के साथ दुःख और यातनाएं भोगता है, एक महान् आनन्द का अनुभव करता है—ऐसा आनन्द, जो आत्म-त्याग में कष्ट भोगने से ही प्राप्त हो सकता है, और उसे वह आन्तरिक शान्ति प्राप्त होती है, जो अपने अन्य निर्दोष भाइयों के साथ निर्दोष की मौत मरने में प्राप्त होती है।

किन्तु मैं अपने भूखे और पीड़ित भाइयों के बीच नहीं रहा, जो मृत्यु के जलूस बना-बनाकर बलिवेदी की ओर जा रहे हैं। मैं—मैं तो विस्तीर्ण सागर के इस पार आनन्द की छाया और शान्ति के प्रकाश में जी रहा हूं, मैं उस करुण नाटक और पीड़ामय वातावरण से बहुत दूर हूं, किन्तु इसके लिए मैं तनिक भी

गर्व नहीं कर सकता, अपने इन आंसुओं तक के लिए भी नहीं !

आह ! एक देश-निर्वासित पुत्र भूख से तड़पते हुए अपने देशवासियों के लिए कर ही क्या सकता है ? और खोये हुए कवि का विलाप भी उनके किस काम का ?

काश ! मैं अपने देश की पृथ्वी पर उगी हुई गेहूं की एक बाल होता, जिसे कोई भूखा बच्चा काटकर उसके दानों द्वारा अपनी आत्मा पर से मृत्यु के बाहुपाश को हटा सकता !

यदि मैं अपने देश के बगीचे में एक पका हुआ फल होता, तो कोई भूखी महिला मुझे तोड़कर खाती और जीवन प्राप्त करती।

और अगर मैं अपने देश के आकाश पर उड़ता हुआ एक पक्षी होता, तो मेरा कोई भूखा भाई मेरा शिकार करता और मेरे शरीर के मांस द्वारा अपने शरीर पर से कब्र के साये को हटा देता।

किन्तु आह ! मैं न तो सीरिया के मैदानों में उगी हुई गेहूं की बाल हूं, और न लेबनान की घाटियों में पका हुआ कोई फल। यही तो मेरा दुर्भाग्य है, और यही मेरा मूक रुदन है, जो रात्रि के प्रेतों के सम्मुख और मेरी आत्मा के सम्मुख मेरी दयनीय स्थिति को प्रकट करता है। यह एक दर्दनाक दुखान्त कहानी है, जो मेरी जिह्वा को बांधे हुए है, और मेरी बाहुओं में नश्तर चुभोती रहती है। उसने मेरी शक्ति, इच्छा और आचरण पर अन्यायपूर्वक अधिकार जमाया हुआ है। यह एक अभिशाप है,

जो ईश्वर और मनुष्य के सम्मुख मेरे भाल पर जल रहा है।

कभी-कभी वे मुझसे कहते हैं, "तुम्हारे देश का यह दुःख संसार-भर की पीड़ा के सामने कुछ भी नहीं है, और देशवासियों के ये आंसू और रक्त उन आंसुओं और रक्त की नदियों के सामने कुछ भी नहीं हैं, जो रात-दिन सारी पृथ्वी के मैदानों और घाटियों में से बह रही हैं।"

ठीक है, किन्तु मेरे देशवासियों की मृत्यु तो एक मूक अभियोग है। यह तो एक अपराध है, जिसे अदृश्य दैत्य मनुष्य पर कर रहे हैं, यह तो गीत एवं दृश्यों से विहीन एक दुःखान्त नाटक है!

अगर मेरे देशवासियों ने निर्दयी और अत्याचारी शासकों पर आक्रमण किया होता और विद्रोहियों की मौत मरे होते, तो मैं कहता, "स्वतन्त्रता के लिए मर जाना दीन समर्पण की छाया में जीने से कहीं अच्छा है; क्योंकि वह, जो हाथ में सत्य की तलवार लेकर मृत्यु का आलिंगन करता है, अमर सत्य के साथ अमरत्व को प्राप्त होता है; क्योंकि जीवन मृत्यु से हीन है और मृत्यु सत्य के सामने कुछ भी नहीं।"

यदि मेरे देश ने विश्व-युद्ध में भाग लिया होता और युद्धक्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त होता, तो मैं कह सकता था, "बढ़ते हुए तूफान ने अपनी शक्ति द्वारा हरी पत्तियों को तोड़ डाला है, और तूफान की छत्र-छाया में बहादुरी की मौत, बुढ़ापे की बाहुओं में पड़कर धीरे-धीरे नष्ट होने से कहीं श्रेष्ठ है।"

किन्तु मृत्यु के बन्द होते जबड़ों से उद्धार पाने के लिए कोई रास्ता ही नहीं था। मेरे देशवासी घुटनों के बल गिर पड़े और चीखती हुई अप्सराओं के साथ रोते रहे।

यदि एक भूकम्प मेरे देश को हिलाकर टुकड़े-टुकड़े कर डालता और पृथ्वी मेरे देशवासियों को अपनी बगल में दबा लेती तो मैं कह सकता था, "ईश्वरीय शक्ति की इच्छा द्वारा एक विचित्र और रहस्यमय विधि-विधान गतिशील हुआ है और यह निरी मूर्खता होगी यदि हम नश्वर मनुष्य उसके गहन रहस्यों को जानने की इच्छा करें।"

किन्तु मेरे देशवासी न तो विद्रोहियों की मौत मरे, न वे रणक्षेत्र में काम आये, और न भूकम्प ने मेरे देश को छिन्न-भिन्न कर दिया। मृत्यु ही उनका उद्धार करने वाली थी और मात्र भूख ही उनकी प्राण लेने वाली थी!



मेरे देशवासी तड़प-तड़प कर मर गये। उनके हाथ पूर्व और पश्चिम के देशों की ओर फैले हुए थे। वे मरे, जबकि उनकी आंखों के अवशेष आकाश के अन्धकार को घूर रहे थे। वे चुपचाप मर गये, क्योंकि मनुष्यता ने उनकी चीख-पुकार के लिए अपने कान बन्द कर लिये थे। वे मरे, क्योंकि उन्होंने अपने शत्रुओं का साथ नहीं दिया। वे मरे, क्योंकि वे अपने पड़ोसियों से प्रेम करते थे। वे मरे, क्योंकि उन्होंने मानवता पर भरोसा

किया। वे इसलिए मरे, क्योंकि अत्याचारी पर उन्होंने अत्याचार नहीं किया। वे इसलिए मरे, क्योंकि वे पैरों से कुचले फूल थे, न कि कुचलने वाले पैर। वे इसलिए मरे, क्योंकि वे शान्ति स्थापित करना चाहते थे। दूध-दही से भरे-पूरे देश में वे भूख से तड़प-तड़प कर मर गये ! वे इसलिए मरे, क्योंकि जो भी उन्होंने अपने खेतों में उत्पन्न किया, यमदूतों ने वह सब नष्ट कर डाला और उनकी खत्तियों में अनाज के अंतिम दाने तक को चट कर डाला। वे मेरे सीरिया के निवासी भाई इसलिए मरे, क्योंकि विषैले सांपों ने उस वातावरण में विष उगल दिया था, जहां पवित्र देवदार, गुलाब और कुमुदिनी के दृश्य अपनी सांसों द्वारा सौरभ फैला रहे थे।

सीरिया-निवासी मेरे भाई, मेरे और तुम्हारे देशवासी मर चुके हैं और जो मर रहे हैं, उनके लिए क्या किया जा सकता है ? हमारे विलाप उनकी क्षुधा को शान्त नहीं कर सकते और हमारे आंसू उनकी प्यास नहीं बुझा सकते। हम भला क्या कर सकते हैं, जो उन्हें क्षुधा के कठोर चंगुल से मुक्त करें ?

किन्तु मेरे भाई, यह दयालुता ही, जो तुम्हें विवश करती है कि तुम अपने जीवन का एक भाग किसी भी ऐसे मनुष्य की सेवा में अर्पित कर दो, जो जीवन से निराश हो चुका है, केवल एक ऐसा गुण है, जो तुम्हें दिन के प्रकाश और रात्रि की शान्ति पाने का अधिकारी बनाता है।

याद रखो, मेरे भाई ! वह सिक्का, जो तुम उस मुर्झाए हाथ पर रखते हो, जो तुम्हारे सामने फैला हुआ है, एक ऐसी सोने की जंजीर है, जो तुम्हारे धनी हृदय को ईश्वर के प्रेममय हृदय से बांधती है। ○

४ | मुर्दों के बीच

रात का भयानक सन्नाटा था। घने बादलों के गहरे आवरण के पीछे चांद और सितारे छिप गये थे और मैं अकेला भयभीत भूत-प्रेतों की घाटी में घूम रहा था।

आधी रात बीती तो डरावने और रीढ़दार परों वाले पिशाच मेरे चारों ओर उछलने लगे और मैंने एक महाकाय भूत को अपने सम्मुख खड़ा पाया, जो अपनी मायावी भयंकरता से मुझे बेसुध कर रहा था। गरजते हुए स्वर में उसने कहा, "तुम्हारा भय दोहरा है। तुम मेरे भय से भयभीत हो, परन्तु तुम इसे छिपा नहीं सकते; क्योंकि तुम मकड़ी के बारीक धागे से भी अधिक निर्बल हो। ए ! तुम्हारा नाम क्या है ?"

एक विशाल चट्टान का सहारा ले मैंने अपने आपको इस आकस्मिक आघात से संभाला और एक बीमार की-सी कांपती हुई आवाज में उत्तर दिया, "मेरा नाम अब्दुल्ला है, जिसका अर्थ है ईश्वर का दास।" कुछ क्षण के लिए वह मूक बना रहा, एक भयानक चुप्पी साधे रहा ! मैं उसकी आकृति से परिचित-सा हो गया, किन्तु उसके विलक्षण विचारों, शब्दों तथा उसके अद्‌भुत विश्वासों और भावनाओं को जानकर मैं एक बार फिर कांप उठा।

तब वह चीखकर बोला, "ईश्वर के दास अनेकों हैं और ईश्वर को अपने दासों के कारण महान् दुःख है। तुम्हारे पिता ने तुम्हारा नाम उलटे असुर-स्वामी क्यों नहीं रख दिया, ताकि इस धरती के बहुत बड़े संकट में एक और विपत्ति बढ़ जाती ? तुम भयभीत होकर अपने पूर्वजों द्वारा दिये गए उपहारों के घेरे से चिपके रहते हो और तुम्हारी पीड़ा के कारण होते हैं तुम्हारे माता-पिता के वसीयतनामे, और तुम तबतक मृत्यु के गुलाम बने रहोगे जबतक कि तुम मृत पुरुषों में मिल नहीं जाओगे !

"तुम्हारे सभी कार्य निस्सार और शून्य हैं और तुम्हारे जीवन खोखले हैं। वास्तविक जीवन से तुम्हारी कभी भेंट नहीं हुई, और न होगी, और न तुम्हारा प्रवंचक अस्तित्व तुम्हारे जीते-जी मरण का अनुभव पा सकेगा। तुम्हारी भ्रामक दृष्टि लोगों की जिन्दगी के तूफान को सामने कांपते हुए देखती है और तुम समझते हो कि वह जीवित है, जबकि वास्तव में वे तभी से मरे हैं, जबसे उन्होंने जन्म लिया है। हां ! उन्हें दफनानेवाला कोई न था। अब तुम्हारे लिए एक अच्छा व्यवसाय है और वह है कब्र खोदने का। इस प्रकार तुम थोड़े से जीवित लोगों को इन जिन्दा लाशों से मुक्त कर सकते हो, जो उनके घरों, सड़कों और मन्दिरों के चारों ओर ढेरों पड़ी हैं।"

मैंने विरोध किया, "मैं ऐसा व्यवसाय नहीं अपना सकता। मेरी पत्नी और बच्चों को मेरा सहारा और साथ चाहिए।"

वह अपने घने बालदार पुट्ठों को, जो बलूत के पेड़ की पुष्ट

जड़ों-जैसे प्रतीत होते थे, दिखाता हुआ तथा जीवन और शक्ति में उमड़ता हुआ मेरी ओर झुका और चिंघाड़ने लगा, "प्रत्येक व्यक्ति को एक फावड़ा दो और उसे कब्र खोदना सिखाओ। तुम्हारा जीवन और कुछ नहीं, बस एक घनी व्यथा है, जो सफेद पलस्तर की हुई दीवार के पीछे छिपा हुआ है।

"हममें मिल जाओ, क्योंकि हम पिशाच ही वास्तविकता के स्वामी हैं। कब्रें खोदना धीमे-धीमे सही, किन्तु निश्चित लाभ लाता है और उन मृत कीड़ों को, जो तूफान में कांपते रहते हैं किन्तु उसके साथ दौड़ नहीं लगा सकते, समाप्त कर देता है।"

फिर उसने कुछ सोचा और पूछा, "तुम्हारा धर्म क्या है?"

मैंने साहसपूर्वक बताया, "मैं ईश्वर में विश्वास रखता हूं और उसके पैगम्बरों का आदर करता हूं। मैं सदाचार से प्रेम करता हूं और अनन्तता में मेरी आस्था है।"

विलक्षण बुद्धि और दृढ़ विश्वास से उसने उत्तर दिया, "मानवी होंठों पर ये खोखले शब्द ज्ञान ने नहीं, अपितु अतीत ने रख दिये हैं और तुम—तुम वास्तव में केवल अपने में विश्वास करते हो और अपने आपको छोड़कर और किसी का आदर नहीं करते। तुम्हें केवल अपनी अभिलाषाओं की अनन्तता ही में विश्वास है। आरम्भ से अबतक मनुष्य ने अपने आपको समुचित नाम दे-देकर पूजन किया है, और अब 'ईश्वर' शब्द का तात्पर्य भी वह 'स्वयं' ही लेता है।"

फिर वह महाकाय भूत भीषण ठहाका मारकर हंसा,

जिसकी प्रतिध्वनि खोखली गुफाओं में गूंजने लगी, और उलहना देकर उसने कहा, "वे मनुष्य कितने अद्‌भुत हैं, जो अपने-आपकी ही पूजा करते हैं और फिर जिनका वास्तविक अस्तित्व मिट्टी के लोथ के सिवा कुछ भी नहीं है।"

वह तनिक रुका। मैंने उसके कथन पर विचार किया और उसके अर्थ को सोचा। तब मैंने पाया कि वह उस ज्ञान का स्वामी था, जो जीवन से अधिक विलक्षण, मृत्यु से अधिक भयानक, और सत्य से भी अधिक गहरा था। डरते हुए मैंने साहस करके पूछा, "क्या तुम्हारा भी कोई धर्म अथवा परमात्मा है ?"

"मेरा नाम पागल परमात्मा है," उसने उत्तर दिया, "हमेशा मेरा जन्म होता रहा है और मैं अपनी सत्ता का स्वयं परमात्मा हूं। मैं बुद्धिमान नहीं हूं, क्योंकि बुद्धिमता निर्बलता का लक्षण है। मैं शक्तिशाली हूं और मेरे पैरों के संकेत से धरती घूमती है। जब मैं रुकता हूं तो सितारों का जुलूस भी मेरे साथ रुक जाता है। मैं लोगों पर हंसता हूं, रात्रि के दानवों के साथ घूमता हूं। पिशाचों के महान सम्राटों के साथ मेरा मेल-जोल है। जीवन और मरण के रहस्यों पर मेरा अधिकार है।

"'प्रातः मैं सूर्य की निन्दा करता हूं, मध्याह्न को मैं मनुष्यता को कोसता हूं, सन्ध्या के समय मैं प्रकृति को नष्ट करने के लिए विचार करता हूं और रात्रि में मैं घुटने टेक कर स्वयं का पूजन करता हूं। मैं कभी नहीं सोता, क्योंकि मैं कालात्मा हूं, विशाल 'समुद्र' और 'अहं तत्त्व।' मैं मानवशरीर

का भोजन करता हूं, उनके रक्त का पान करके अपनी प्यास बुझाता हूं और उनके मरण-श्वास का अपने प्राण-वायु के रूप में प्रयोग करता हूं। यद्यपि तुम अपने को छलते हो, किन्तु तुम मेरे भाई-बन्धु हो, और तुम मेरी तरह ही तो रहते हो ! परे हटो पाखण्डी ! जाओ घिसटते हुए वापस धरती को चले जाओ, और जीवित मुर्दों के बीच अपने आपकी पूजा करते रहो।"

सुध-बुध खोनेवाली उस घबराहट में मैं पथरीली और गुफाओं से भरी घाटी पर से नीचे लुढ़कने लगा। जो कुछ मेरे कानों ने सुना था और आंखों ने देखा था, उसपर मुझे विश्वास नहीं आ रहा था। उसकी कही हुई कुछ सचाइयों की पीड़ा के कारण मैं फटा जा रहा था और खिन्न विचारों में डूबा हुआ मैं सारी रात मैदानों में घूमता रहा।



मैंने एक फावड़ा ले लिया और अपने-आपसे कहा, "कब्रों को गहरा खोदो। जाओ, जहां कहीं भी तुम्हें जीवित मुर्दों में से कोई मिल जाय, उसे धरती में दफना दो।"

उस दिन से मैं कब्रें खोद रहा हूं और जीवित मुर्दों को दफना रहा हूं। किन्तु जीवित मुर्दे अनेक हैं और मैं अकेला हूं, मेरा कोई सहायक भी नहीं है। ○

५ | दुःख के गीत

जनता के दुःख दांत की विकट पीड़ा के समान हैं और समाज के मुंह में ऐसे कई गले-सड़े तथा रोगी दांत हैं; किन्तु समाज सावधानी से और धैर्यपूर्वक उनकी चिकित्सा नहीं करता। उलटे बाहरी चमक-दमक द्वारा तथा चमचमाते सोने के मुलम्मे से, जो नेत्रों को दूर से दांतों की खराबी के बारे में अन्धा बना देता है, स्वयं को सन्तुष्ट कर लेता है। किन्तु अपने आपको निरन्तर पीड़ा से रोगी तो अनभिज्ञ नहीं रख सकता।

सामाजिक दन्त-रोगों के कई चिकित्सक हैं, जो संसार में से पाप-रूपी दन्त-रोग को सौन्दर्य के भराव-मात्र उपचार से दूर करने का प्रयत्न करते हैं और बहुत-से रोगी ऐसे हैं, जो समाज-सुधारकों की इच्छाओं पर चलते हैं और इस प्रकार अपने दुखों को और भी बढ़ा लेते हैं। इस प्रकार अपनी क्षीण होती शक्ति को और भी कम कर बैठते हैं और अपने आपको छलकर अधिकाधिक निश्चित रूप से मृत्यु की घाटी की ओर घसीटे ले चलते हैं।

सीरिया के सड़े-गले दांत उसकी पाठशालाओं में पाये जाते हैं, जहां आज के युवक को कल का कष्ट-भोगी बनाना सिखाया जाता है; वे उसके न्यायालयों में हैं, जहां न्यायाधीश कानून को

तोड़ते-मरोड़ते हैं और उससे ऐसे खुल खेलते हैं, जैसे एक शेर अपने शिकार के साथ खेलता है; उसके राजभवनों में हैं, जहां मिथ्या और पाखण्ड का राज्य है और गरीबों की झोंपड़ियों में है, जहां भय, अज्ञान और भीरुता का निवास है।

कोमल उंगलियोंवाले राजनैतिक दंत-चिकित्सक लोगों के कानों में यह चिल्ला-चिल्लाकर कहते हुए शहद उंडेलते हैं कि वे राष्ट्रीय निर्बलता के छिद्रों को पूर रहे हैं। उनका गीत चलती चक्की के स्वर से भी अधिक ऊंची आवाज में सुनाया जाता है, किन्तु वास्तव में वह गंदे तालाब में टर्राते हुए मेंढक की आवाज-सी भी नहीं होता।

इस खोखले संसार में अनेक विचारक और आदर्शवादी हैं! उनके स्वप्न कितने धुंधले हैं!



सौन्दर्य यौवन की सम्पत्ति है। किन्तु यौवन, जिसके लिए ही इस संसार की रचना हुई थी, एक ऐसे स्वप्न के सिवा कुछ भी नहीं, जिसका माधुर्य उस अज्ञानता का दास है, जो उसे बहुत देर बाद जगने देती है। क्या ऐसा भी कभी समय आयेगा, जब बुद्धिमान लोग यौवन के मधुर स्वप्नों तथा ज्ञान के हर्ष को एक साथ बांध देंगे? प्रत्येक का अलग-अलग अस्तित्व तो नगण्य है। क्या वह भी दिन कभी आयेगा, जब प्रकृति मनुष्य की शिक्षक, मानवता उसकी धर्म-पुस्तक और जीवन उसकी दैनिक पाठशाला होगी?

यौवन का उद्देश्य हर्ष—आनन्द के उपयुक्त और दायित्व में नम्रतापूर्ण—तबतक पूरे तौर से प्राप्त नहीं हो सकता, जबतक ज्ञान से दिन का सवेरा घोषित न हो।

ऐसे अनेक पुरुष हैं, जो अपने यौवन के बीते दिनों को द्वेष-पूर्वक कोसते हैं और ऐसी बहुत-सी स्त्रियां हैं, जो अपने व्यर्थ गये वर्षों से उस क्रुद्ध शेरनी की भांति, जिसके बच्चे खो गये हों, घृणा करती हैं और अनेक ऐसे युवक और युवतियां भी हैं, जो अपने हृदयों में भविष्य की कटार-रूपी स्मृतियों को छिपाये रखते हैं और अपने आपको अनजाने में ही हर्ष-विहीनता के तीखे और विषैले वाणों से घायल करते रहते हैं।

बुढ़ापा धरती की बर्फ है। इसे प्रकाश और सत्य के द्वारा अपने नीचे बसे यौवन के बीजों को गर्मी पहुंचाकर सुरक्षित रखना चाहिए और इनका प्रयोजन पूरा करना चाहिए, ताकि निसान[1] आये और यौवन के उगते हुए पवित्र जीवन को नव-जागरण द्वारा पूर्णतया विकसित करे।

हम अपने आत्मिक उत्थान की ओर बहुत धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं और केवल वही तल, जो नभमंडल की तरह अनन्त है, सुन्दरता के प्रति हमारे अनुराग और प्रेम द्वारा हमें जीवन के सौन्दर्य का बोध कराता है।

भाग्य मुझे आधुनिक संकीर्ण सभ्यता के दुःखपूर्ण प्रवाह में

---

१ यहूदियों के 'अबीव' नामक मास को हिब्रू भाषा में 'निसान' कहते हैं।

बहा ले चला और प्रकृति की भुजाओं से छीन उसके शीतल कुंजों से निकालकर उस भाग्य ने मुझे कठोरतापूर्वक जन-समुदाय के चरणों में जा पटका, जहां मैं नगर की यातनाओं का शिकार बना हुआ हूं।

किसी भी ईश्वर-पुत्र को इतना कड़ा दण्ड नहीं मिला होगा। किसी भी ऐसे मनुष्य के भाग्य में इतना विकट देश-निकाला न लिखा होगा, जो पृथ्वी के एक तिनके से भी इतने उत्साह से प्रेम करता है कि उसके अस्तित्व का प्रत्येक तन्तु कांप उठता है। किसी भी अपराधी पर लगाये गए बन्धन मेरी कैद के संताप के सम्मुख कुछ भी न होंगे; क्योंकि मेरी कोठरी की संकीर्ण दीवारें मेरे हृदय को कुचल रही हैं।

भले ही हम स्वर्ण-अशर्फियों की दृष्टि से ग्रामवासियों से अधिक धनी हैं, किन्तु वे यथार्थ जीवन की पूर्णता में हमसे कहीं अधिक धनी हैं। हम प्रचुर मात्रा में बीज बोते हैं, किन्तु पाते कुछ भी नहीं और वे प्रकृति-प्रदत्त श्रेष्ठ और उदार पारितोषिक पाते हैं, जो ईश्वर के परिश्रमी बच्चों को प्रकृति देती है। हम हेर-फेर के व्यापार में धूर्त्तता से काम लेते हैं, और वे प्रकृति की उपज को शान्ति और निष्कपटता से ग्रहण करते हैं। हम भविष्य के पिशाचों को देखते हुए बेचैनी की नींद सोते हैं, और वे मां की गोद से चिपटे हुए बच्चे के समान निद्रा-निमग्न होते हैं; क्योंकि वे जानते हैं कि प्रकृति कभी भी अपनी अभ्यस्त उपज देना स्वीकार नहीं करेगी।

हम लाभ के दास हैं और वे सन्तोष के स्वामी हैं। हम जीवन के प्याले में से कड़ुआहट, निराशा, भय और थकान का पान करते हैं और वे ईश्वर के आशीर्वादों का स्वच्छतम अमृत पीते हैं।

हे अनुग्रह करनेवाले परमात्मा ! इन मीनारों के पीछे, जो मूर्तियों और प्रतिबिम्बों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, तू जो मुझसे छिप गया है, मेरी कैदी आत्मा की विलापपूर्ण पुकार सुन! मेरे फटते हुए हृदय का संताप सुन ! मुझपर दया कर और अपने इस भटकते हुए बच्चे को उन पर्वतों की ओर वापस ले चल, जहां तेरा अपना घर है। ○

६ | एक आंसू, एक मुस्कान

अनेकों की प्रसन्नताओं से भी मैं अपनी मनोव्यथाओं को नहीं बदलूंगा और न मैं उन आंसुओं को, जो मेरे प्रत्येक अंग से संताप बहा ले जाते हैं, हंसी में बदलना चाहूंगा। मैं तो यही चाहूंगा कि मेरा जीवन एक आंसू और एक मुस्कान ही बना रहे—एक आंसू जो मेरे हृदय को पवित्र करके जीवन के रहस्यों और गुप्त विषयों से मेरा बोध करा दे; एक मुस्कान, जो मुझे अपनी जाति के पुत्रों के समीप लाये और जिससे मैं देवताओं की भव्यता का प्रतिरूप बन जाऊं। एक आँसू जो मुझे निराश लोगों से मिला दे और एक मुस्कान, जो मेरे जीवन में हर्ष का प्रतीक बन जाय।

एक थके-हारे और निराश जीवन की अपेक्षा मैं उत्सुक तथा आकांक्षी रहकर मर जाना चाहूंगा।

अपनी आत्मा की गहराइयों में उतरने के लिए मैं प्रेम और सौन्दर्य की भूख चाहता हूं, क्योंकि मैंने उन लोगों को, जो सन्तुष्ट रहते हैं, अत्यन्त दुखी पाया है। मैंने उत्कंठित और आकांक्षी लोगों की आहें सुनी हैं और उन्हें मधुरतम लय से भी मीठा पाया है।

सन्ध्या होती है तो पुष्प अपनी पत्तियों को समेट लेता है

और अपनी इच्छाओं को गले लगाकर सो जाता है। भोर होते ही वह सूर्य का चुम्बन पाने के लिए अपने अधरों को खोल देता है।

पुष्प का जीवन है आकांक्षा और उसकी पूर्ति—एक आंसू और एक मुस्कान।

सागर का जल वाष्प बनता है, ऊपर उठता है, इकट्ठा होता है और मेघ बन जाता है, मेघ पहाड़ियों और घाटियों के ऊपर मंडराता रहता है, जबतक कि उसकी भेंट मन्द पवन से नहीं हो जाती। तब वह विलाप करता हुआ आंसू बनकर खेतों और खलिहानों पर गिर पड़ता है और अपने घर—सागर को—लौटने के लिए नदियों और नालों से जा मिलता है।

मेघ का जीवन एक वियोग और संयोग है, बस—एक आंसू और एक मुस्कान!

इसी प्रकार आत्मा भौतिक संसार में विचरने के हेतु विशाल आत्मा ईश्वर से बिछुड़ जाती है और मेघ के समान ही संताप के पर्वतों तथा हर्ष के मैदानों को पार करती हुई मृत्यु की शीतल वायु से जा मिलती है और फिर लौट जाती है, वहां, जहां से चली थी—प्रेम और सौन्दर्य के सागर में—ईश्वर में! ○

७ | एक मुस्कान, एक आंसू

सूर्य ने उन हरे-भरे बगीचों पर से अपने वस्त्र समेट लिये और दूर क्षितिज से उदय होकर चन्द्रमा ने अपनी शीतल चांदनी सब ओर छिटका दी। मैं वहां एक पेड़ के नीचे बैठा सांझ के बदलते रंगों को देखने लगा। वृक्ष की टहनियों के पार मैंने छिटके सितारों को देखा, जो नीले रंग के गलीचे पर सिक्कों की तरह बिखरे हुए जान पड़ते थे और दूर घाटी में से आता झरनों का मधुर कलकल सुनता रहा।

जब पक्षियों ने पत्तियों से ढकी शाखाओं में अपने-आपको सुरक्षित कर लिया, पुष्पों ने अपनी आंखें मींच लीं और शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो गया, तो मेरे कानों में घास पर पड़ती हलकी पदचाप सुनाई दी। मैं जो मुड़ा तो मैंने एक युवक और एक युवती को अपनी ओर आते हुए देखा। वे रुक गये और एक वृक्ष के नीचे बैठ गये।

युवक ने अपने चारों ओर देखा और कहा, "मेरे पास बैठो, प्रिये, और ठीक से मेरे शब्दों को सुनो। मुस्काओ, क्योंकि तुम्हारी मुस्कान, हमारे सम्मुख जो कुछ भी है उसकी प्रतीक है। प्रसन्न होओ, क्योंकि दिन भी हमारे ही लिए प्रसन्न होते हैं। फिर भी मेरी आत्मा कहती है कि तुम्हारा हृदय आशंकाओं से

भरा हुआ है, और ज़ानती हो, प्रेम-व्यवहार में शंका करना अपराध है।

"आने वाले दिनों में क्या तुम इन विशाल मैदानों की रानी बनना चाहोगी, जिसे चांद की चन्द्रिका ज्योतिर्मय कर देती है और इस महल की महारानी बनना पसन्द करोगी, जो महाराजाओं के राज्य-प्रासाद की भांति है ? मेरे सुन्दन घोड़े तुम्हें आनन्द-विलास के स्थानों पर ले जायेंगे और मेरे रथ तुम्हें मनोहर जगहों और नृत्यालयों में पहुंचा आयंगे।

"मुस्कराओ प्रेयसी ! जैसे मेरे कोषों में सुवर्ण मुस्कराता है। मेरी ओर देखो, जैसे मेरे पिता के अनमोल रत्न मुझे देखते रहते हैं। मेरी ओर ध्यान दो, मेरी प्रिये ! क्योंकि मेरा हृदय केवल तुम्हारे सामने अपने गुप्त रहस्यों को खोलना चाहता है। हमारे सा़मने आनन्द का एक वर्ष पड़ा है—एक वर्ष, जो हम स्वर्ण मुद्राओं के साथ नील नदी के महलों तथा लेबनान के देव-दारों की छांह में बिता आयंगे। तुम राजाओं और प्रतिष्ठित पुरुषों की पुत्रियों से मिलोगी और वे लोग तुम्हारे वस्त्र तथा शृंगार से ईर्ष्या करेंगी। मैं तुम्हें वह सबकुछ दूंगा। क्या इन सबके लिए तुम्हारी कृपा-दृष्टि नहीं प्राप्त होगी ? आह ! तुम्हारी मुस्कान कितनी मधुर है ! यही तो मेरे भाग्य की मुस्कान है !"

कुछ समय पश्चात् वे लोग वहां से मन्द गति से अपने पैरों तले सुकुमार पुष्पों को कुचलते हुए ऐसे चले, मानो धनी के पैर

निर्धन के हृदय को कुचलते जा रहे हैं। इस प्रकार वे मेरी आंखों से ओझल हो गये, और मैं प्रेम-व्यवहार में धन की स्थिति पर सोचता रह गया। मैंने धन के बारे में सोचा, जो मनुष्य की समस्त दुष्टताओं का आदि-कारण है और मैंने प्रेम के बारे में सोचा, जो प्रकाश और हर्ष का स्रोत है।

मैं विचारों की दुनिया में भटकता रहा। तब एकाएक मेरी दृष्टि दो आकृतियों पर पड़ी, जो मेरे सामने से गुजर कर घास पर जम गईं। वे थे एक युवक और एक सुन्दरी, जो मैदान के बीच एक कोने में बसी किसानों की झोपड़ियों में से आये थे।

कुछ क्षण की चुप्पी के बाद, जो अखर-सी रही थी, मैंने आहों के साथ ये शब्द घायल होंठों से निकलते हुए सुने :

"अपने आंसुओं को पोंछ लो, मेरी प्रिये, क्योंकि प्रेम, जिसने हमारी आंखें खोल दीं और हमें अपना गुलाम बना लिया है, हमें धैर्य और सहनशीलता की बरकतें प्रदान करेगा। अपने आंसुओं को पोंछ डालो और धीरज धरो, क्योंकि हमने प्रेम की एक यादगार स्थापित कर ली है और उसी प्रेम के लिए हम निर्धनता की यातनाएं, दुर्भाग्य, कड़ुवाहट और विदाई का कष्ट सहेंगे।

"मैं समय से तबतक सन्तुष्ट नहीं होऊंगा, जबतक कि उसमें से ऐसा खजाना संचित न कर लूं, जो तुम्हारे हाथों द्वारा ग्रहण करने योग्य हो। प्रेम, जो ईश्वर है, हमारी इन आहों

और आंसुओं की भेंट अवश्य ही स्वीकार करेगा, और उसके लिए हमें उचित प्रतिफल भी देगा। तो अब विदा दो मेरी प्रिये, क्योंकि अब मैं चलता हूं, चन्द्रमा डूबने लगा है।"

मैंने एक कोमल आवाज सुनी, जिसमें कोई सिसकियां ले रहा था। वह एक अविवाहित सुन्दरी की आवाज थी, जिसमें व्याप्त था प्रेम का दर्द, विरह-व्यथा और बह रहा था धैर्य का मिठास !

"विदा प्रियतम !"

वे बिछुड़ गये, और मैं न जाने कबतक उस वृक्ष के नीचे ही बैठा रहा। फिर दयालुता की उंगलियां मुझे खींच ले गईं और इस अद्भुत सृष्टि के रहस्यों ने मुझे खिन्न कर दिया।

उस समय मैंने प्रकृति की ओर देखा, जो गहरी निद्रा में लीन थी। तब मैंने सोचा तो एक ऐसी वस्तु को पाया, जो स्वतन्त्र और अनन्त है—एक ऐसी वस्तु, जो स्वर्ण के बदले भी नहीं खरीदी जा सकती। मैंने एक ऐसी वस्तु को पा लिया, जिसपर शरद् के आंसुओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और निर्धनता और कष्ट जिसे समाप्त नहीं कर सकते—एक ऐसी वस्तु, जो बसन्त में फूलती है और ग्रीष्म में फल देती है। वहां मैंने पाया 'प्रेम'। ○

८ | कवि की मृत्यु

रात्रि ने नगर पर अपने पंख फैला दिये और हिम ने उसे अपनी चादर में लपेट लिया। शीत के मारे लोग अपने-अपने घरों में जा छिपे। सी-सी करती पवन मकानों के बीच में से ऐसे चल रही थी, मानो कब्रों के बीच कोई आदमी मृत लोगों के लिए विलाप कर रहा हो।

उस नगर की बाहरी सीमा पर एक पुराना मकान था। उसकी जीर्ण-शीर्ण दीवारों पर बर्फ का बोझ ऐसे पड़ा था, मानो अब गिरीं, अब गिरीं। उस मकान के एक कोने में एक अधटूटी चारपाई पर फटा-पुराना बिछौना था, जिसपर एक मरणासन्न व्यक्ति लेटा हुआ दीपक की कांपती लौ को, जो अन्धकार से जूझ रही थी, अपलक देख रहा था। उसकी जवानी का अभी मधुमास ही था; परन्तु वह जानता था कि जीवन के बन्धनों से उसकी मुक्ति का अवसर निकट आ गया है। वह मृत्यु के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके पीले चेहरे पर आशा की ज्योति खेल रही थी और उसके अधरों पर एक दर्दभरी मुस्कान थी।

वह एक कवि था, जो लोगों के हृदयों को अपने मनोहर गीतों से प्रसन्न करने के लिए आया था। पर अब वह धनिकों

के इस जीवलोक में भूख से तड़प-तड़प कर मर रहा था। एक सौम्य आत्मा, जो ईश्वर के वरदान-स्वरूप जीवन में माधुर्य उत्पन्न करने आई थी, इससे पहले कि मनुष्यता उसपर मुस्कराये, इस संसार से विदा ले रही थी !

वह अन्तिम सांस ले रहा था और उसके पास सिवा एक दीपक के, जो एकान्त जीवन में उसका साथी था और कुछ कागज के फटे-टूटे टुकड़ों के, जिनपर उसकी विनम्र आत्मा के प्रतिबिम्ब थे. और कुछ न था।

मरणासन्न युवक ने अपनी नष्ट होती शक्ति को समेट लिया, अपनी भुजाओं को आकाश की ओर उठाया और अपनी कुम्हलाती पलकें इस प्रकार हिलाईं, मानो उसकी बुझती आंखें उस भग्न कुटिया की छत को तोड़ देंगी, ताकि वह बादलों से दूर सितारों को देख सके। तब उसने कहा :

"अब आ, ओ श्रेष्ठ कालात्मा, मेरी आत्मा तेरे लिए व्याकुल है। मेरे पास आ और इन सांसारिक बेड़ियों को ढीला कर दे, क्योंकि मैं इन्हें घसीटते-घसीटते थक गया हूं। आ, ए मधुर मृत्यु, और मुझे इन मनुष्यों से दूर ले चल, जो मुझे अपने बीच एक अजनबी समझते हैं, क्योंकि मैंने देवताओं की वाणी मानव-भाषा में व्यक्त की थी। जल्दी कर, क्योंकि मनुष्यों ने मेरा तिरस्कार कर दिया और मुझे विस्मृति के गड्ढे में धकेल दिया है, इसलिए कि मैंने उनकी भांति दूसरे के धन को ईर्ष्या

से नहीं देखा और न उस व्यक्ति से अनुचित लाभ उठाया, जो मुझसे निर्बल था। पास आ, प्रिय मृत्यु ! और मुझे यहां से ले चल, क्योंकि मेरी जाति के लोगों को अब मेरी आवश्यकता नहीं है। मुझे अपनी प्रेम-भरी छाती से लगा ले, मेरे होंठों को चूम ले—उन होंठों को, जिन्होंने कभी मां का चुम्बन नहीं लिया, न बहन के कपोल छुए और न प्रेमिका के चुम्बन का अनुभव पाया। जल्दी आ और मेरा आलिंगन कर, मृत्यु, मेरी प्रिये !"

तब उस मरणासन्न युवक की शैया के पास एक स्त्री की मूर्ति आ खड़ी हुई, जिसका सौन्दर्य रूहानी था। वह हिम जैसे श्वेत वस्त्रों में वेष्टित थी और उसके हाथों में स्वर्ग के कमल-पुष्पों का एक मुकुट था।

उस स्त्री ने कवि के निकट आकर उसका आलिंगन किया और उसके नेत्रों को बन्द कर दिया, ताकि वह आत्म-चक्षुओं से उसे देख सके। उसके अधरों का उसने प्यार से एक चुम्बन लिया—एक ऐसा चुम्बन, जिसने उसके अधरों पर पूर्ण सन्तोष की एक मुस्कान बिखेर दी और उसी क्षण धरती और अन्धकारमय कोने में बिखरे हुए कुछ फटे-टूटे कागजों के अतिरिक्त वहां कुछ भी शेष न रहा।



सदियां बीत गईं और उस नगर के लोग अज्ञान और मूर्खता में ही पड़े रहे। जब वे महानिद्रा से जागे और उनके

नेत्रों ने ज्ञान का सबेरा देखा तो उन्होंने नगर के बीच कवि की एक मूर्ति की स्थापना की। प्रत्येक वर्ष वे एक नियत समय पर वहां उसके सम्मान में एक पर्व मनाने लगे।

कितने मूर्ख हैं लोग !

९ | खंडहरों के बीच

सूर्यनगर को चन्द्रमा ने एक सुरम्य झीनी चादर से ढंक दिया और सम्पूर्ण जीव-जगत् में निस्तब्धता छा गई। भयावने खण्डहर महाकाय पिशाचों की भांति उठ खड़े हुए, मानो रात्रि के इस दृश्य की खिल्ली उड़ा रहे हों।

इसी समय अस्तित्वहीन दो आकृतियां शून्य में से किसी झील की सतह पर के कोहरे की भांति उभर आईं। वे एक संगमरमर के खम्भे पर बैठ गईं, जिसे काल ने उस अद्भुत भवन से जबर्दस्ती खींच लिया था और वे उस दृश्य को देखने लगीं, जो किसी समय के मनमोहक भवनों की याद दिला रहा था। कुछ क्षण पश्चात् उनमें से एक ने अपना सिर उठाया और एक ऐसी आवाज में, जो दूर घाटियों से प्रतिध्वनित होकर लौट-लौटकर आ रही थी, कहा :

"प्रियतमे ! ये उन समाधियों के खंडहर हैं, जिन्हें मैंने तुम्हारे लिए बनवाया था। और वे हैं उस भवन के खंडहर, जो मैंने तुम्हारे मनोरंजन के लिए बनवाये थे। अब वे भूमिसात् हो गये हैं और अब वहां सिवा उस चिन्ह के कुछ भी शेष नहीं रहा है, जो संसार को उस शान-शौकत की कहानी सुना रहा है, जिसकी उन्नति के लिए मैंने अपना जीवन बिताया था,

और उस शक्ति को, जिसके यश के लिए मैंने निर्बलों को काम पर लगाया था। अच्छी तरह देखो और सोचो प्रिये ! भौतिक तत्वों ने मेरे बनाये हुए इस नगर को नष्ट कर दिया और युगों ने मेरी समस्त बुद्धिमत्ता को समाप्त कर दिया तथा विस्मृति ने उस समस्त राज्य पर आधिपत्य जमा लिया, जिसकी मैंने नींव रखी थी। आह ! उन प्रीति-कणों के सिवा कुछ भी तो बचा नहीं, जिन्हें तुम्हारी सुषमा ने उभारा और वह सौन्दर्य, जिसे तुम्हारी प्रीति जीवित कर पाई।

"मैंने यज्ञशाला में पूजा करने के निमित्त एक मन्दिर बनवाया। पुजारियों ने उसे शुद्ध किया, किन्तु आलस्य ने उसे मिट्टी में मिला दिया। तब मैंने मन में प्रेम का मन्दिर बनाया और ईश्वर ने उसे पवित्र किया। इसे कोई अपमानित नहीं कर सकता। मैंने अपने दिन भौतिक तत्वों और वस्तुओं के जानने की खोज में बिता दिये और लोग बोले, 'व्यवहार की बातों में यह कितना विद्वान् है।' और देवताओं ने कहा, 'कितनी थोड़ी बुद्धि का आदमी है यह !' तब मैंने तुम्हें देखा प्रिये, और प्रेम और आकांक्षा के गीत गाये। इसपर देवता प्रसन्न हो उठे, किन्तु जहां तक मनुष्यों का सम्बन्ध है, उन्होंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

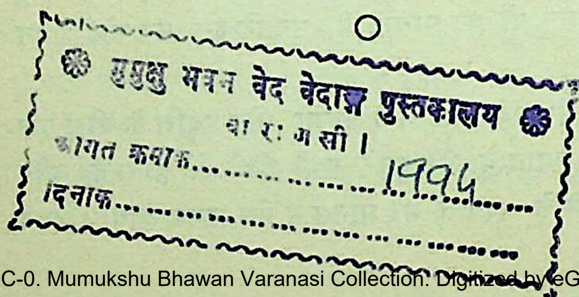
"मेरे वैभव के दिन मेरी आत्मा और प्रवृत्ति के बीच एक दीवार के समान थे, जैसे दूसरे सभी जीवों में होता है, और तुम्हें पा लेने के पश्चात् मेरे मानस में प्रेम उमड़ आया। उसने

इस दीवार को ढहा दिया। तब मुझे उन दिनों पर दुःख हुआ जो निराशा की लहरों के अधीन होकर बीते थे और जब मैं यह सोचता था कि सूर्य के नीचे सभी कुछ निरर्थक है। मैं अपना कवच धारण करता था और अपनी ढाल संभालता था तो मेरे गिरोह के लोग मुझसे भय खाते थे, और जब प्रेम ने मुझे जगाया तो मैं अपनों के सम्मुख विनीत बन गया। पर जब मृत्यु आई तो उसने जालीदार और मिट्टी के वस्त्र को उतार फेंका और मेरा प्रेम ईश्वर-परक बन गया।"

कुछ देर की खामोशी के बाद दूसरी आकृति बोली, "जैसे पुष्प मिट्टी में से सुगन्ध और जीवन प्राप्त करता है, ठीक उसी प्रकार आत्मा भूततत्वों की निर्बलता और दोषों में से ज्ञान तथा शक्ति को निचोड़ लेती है।"

इसके बाद दोनों आकृतियां एक-दूसरे में घुल-मिलकर एक बन गईं और चल पड़ीं।

कुछ समय पश्चात् वायु ने उन खंडहरों में आवाज दी, "ईश्वर प्रेम कें अतिरिक्त अपने में कुछ भी नहीं रखता, क्योंकि मात्र यही उसकी अपनी पसन्द है।"



'मंडल' द्वारा प्रकाशित

खलील जिब्रान का साहित्य

□□

- जीवन संदेश
- विद्रोही आत्माएं
- धरती के देवता
- हीरे और मोती
- आंसू और मुस्कान
- शैतान
- पागल
- बटोही
- तूफान

□□